फ़ख़्र ए इंतेसाब

अपनी फुफी दादी हज़रत बीबी सैय्यदा जमीला ख़ातून कुतबिया रहमतउल्लाह अलैहा के नाम कि जिनके औसाफ़े हमीदा और इख़लाक़े पसंदीदा पर एक आलम शाहिद है! जिनके दामने ज़िया से वोह नूर ज़हूर पज़ीर हुआ कि जिसने बज़्मे हस्ती को रौशन और ताबां कर दिया जिन्हें आफ़ताब ए अशरफ़, मजज़ूबे कामिल हज़रत सैय्यद जलाल अशरफ़ रहमतउल्लाह अलैह के नाम से दुनिया जानती और पहचानती है!

आपकी दुआओं का तालिब, सैय्यद कुतुबउद्दीन मुहम्मद आक़िब कुत्बी!

हर्फ़े आग़ाज़

तमाम तारीफें उस परवरदिगार के लिए हैं जिसने अपनी रबूबियत को आशकार करने के लिए अपने वजूदे नूर से अपने महबूब की तख़लीक़ की और फिर उसी नूरे मुअज़्ज़म से इस बज़्मे क़ायनात को सजाया और इस कौनैन को हुस्ने महबूब की ज़ीनत से आरास्ता और पैरास्ता किया और इस दुनियाए आबो गुल को निखार बख़्शा! फिर जब उस ख़ुदाए लमयज़ल ने अपने मशीयत के तहत तख़लीक़ को मुकम्मल फ़रमाया तो अब वक़्त आया कि तालिबे ख़ल्क़ को मतलूबे ख़ालिक का रुख़ेज़ेबा भी देखना मयस्सर हो जिसके दीदार की आरज़ू में ये बज़्मे कायनात न जाने कितनी मुद्दत से आरास्ता थी! चुनांचे महबूबे ख़ुदा को बशरी लिबास में ज़ेबतन कर के इस दुनियाए आबो गुल में बशक्ल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम जलवा अफ़रोज़ किया गया और इस आफ़ताबे रिसालत महताब नबूवत के नूर से कायनात का गोशा गोशा मुनव्वर हुआ! अब वक़्त था कि जो काम और अहकाम आप की निस्बत से बनी आदम तक अल्लाह को पहुँचाना था, पहुँचा दिया जाए जिस पर ख़ुदा की हिकमत और मशीयत अहले बातिन पर मुनकशिफ़ हो जाये! चुनांचे क़ुरान मजीद फ़ुरक़ाने हमीद का नज़ूल हुआ और अल्लाह के महबूब और आख़री रसूल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम पर इस तरह ख़ुदा की आख़री किताब को भी मुकम्मल किया गया और यूँ नबूवत और रिसालत और आसमानी किताबों का सिलसिला ख़त्म हुआ! लेकिन मशीयते इलाही अभी भी महबूब की उम्मत पर महेरबान थी और इसी लिए उसने जिस बाबे रिसालत को अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम पर बंद कर दिया था अब बशक्ले वलायत हज़रत मौला अली अलैहिस्सलाम खोल दिया और सरकार की उन आहोबुका और गिरया के सदक़े जो सारी सारी

रात रहमतुललिल आलमीन की मुबारक ज़बान से अपनी उम्मत की निजात और मग़फ़िरत के लिए सरज़द हो रही थी ख़ुदा की रहमत जोश खाई और उसने अपने महबूब के सदक़े मुहब्बते अहले बैत सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम को ज़रियाए निजात क़रार दिया और ये वह्यी फ़रमाई कि ऐ महबूब ये ख़ुशख़बरी तमाम उम्मत को सुना दीजे और इस बात का अहेद ले लीजे कि जो मेरी किताब (क़ुरान मजीद) और आपकी औलाद (ख़ानवादए अईम्माए सादात कि जिसकी इब्तेदा मौला अली अलैहिस्सलाम और इन्तेहा मौला इमाम मेहदी अलैहिस्सलाम हैं) के दामन को मज़बूती से थामे रहेगा वो हरगिज़ गुमराह न होगा और निजात पायेगा और यही मेरी रस्सी (हबलिल्लाह) है जो इंसानों के दरमियाँ मुझ तक आवेज़ा है!

क़ुरबान जायें हम उम्मती ऐसे रहीमो करीम आक़ा और मौला रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम पर कि जिनकी बख़्शिशों और एहसानात की कोई उजरत हम अदा नहीं कर सकतें और हमा वक़्त सज्दाए शुक्र अदा करते रहें उस परवरदिगार का कि जिसने हमें अपने महबूब का उम्मती बनाया कि जिसके होने की दुआ अल्लाह के रसूल और नबी हज़रत सैयदना ईसा अलैहिस्सलाम ख़ुद फरमा रहें हैं! क्या ख़ूब कहा है कि ईसा मसीह की दुआ में आया नज़र तेरे महबूब का इश्क़ इस दुआ ने ही मसीह को एक नबी से उम्मती बनाया मेरी दुआ है कि अल्लाह हम सबको सिराते मुस्तक़ीम पर चलने की तौफ़ीक़ और रफ़ीक़ अता फरमाए और अपनी रस्सी (हबलिल्लाह) को मज़बूती से थामे रहने वाला बना दे जो दुनिया में वसीला है उस तक पहुँचने का आमीन या रब्बुल आलमीन।

दुआ का तालिब सैय्यद क़ुतुबुद्दीन मुहम्मद आकिब क़ुत्बी!

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

तमहीद–

क़ुरान मजीद फ़ुरक़ान हमीद में अल्लाह जल्ला शान फ़रमा रहा है

إِنَّمَا أَنتَ مُنذِرٌ وَلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ

तुम तो डर सुनाने वाले हो हर क़ौम के हादी–
सूरह राद आयत नंबर (7)

हदीस पाक में है कि हज़रत अब्दुल्लह इब्न अब्बास रज़िअल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब ये आयते करीमा नाज़िल हुई तो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम ने अपना दस्त अक़दस अपने सीनए मुबारक पर रख कर इरशाद फ़रमाया कि ऐ अली तू हादी है मेरे बाद और राह पाने वाले सब तुझसे राह पाएँगे! वलायत के सिलसिले तुझ से जारी होंगे! उम्मत के उलेमा औलिया ग़ौस अक़ताब सब तुझ से फैज़ पाएंगे– (तफ़सीरे कबीर)

इसी तरह दूसरी जगह मौला अली अलैहिस्सलाम की शान में हादीए कौनैन सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया. मन कुन्तो मौला फ़ हाज़ा अलीउन मौला (मैं जिसका मददगार हूँ अली उसका मददगार है)
अना मदीनतुल इल्म व अलीउन.बाबोहा (मैं इल्म का शहर अली उसका दरवाज़ा है)
(अलीउन–वलीउल्लाह (अली ख़ुदा का दोस्त है)
ये सारे फ़रमान रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम के हैं कि जिसको ख़ुदा के हुक्म से आपकी ज़ुबाने मुबारक से दुनिया तक पहुँचाया गया जिसको ना मानने वाला मुशरिक है! अब यहाँ साफ़

ज़ाहिर होता है कि हुक्मे इलाही को ना मानने वाला मुशरिक है तो बाबे अली अलैहिस्सलाम की चौखट से फैज़े वलायत पाने वाले बुज़ुर्गाने दीन की अज़मत का मुनकिर किस दरजे में शामिल होगा जिनको अज़ल से इस दरजए औला पर मुन्तख़िब किया गया था, इस चीज़ का अन्दाज़ा अहले इल्म बख़ूबी लगा सकते हैं! और जिसकी निशानदही क़ुरान और हदीस से इस तरह से हो रही है।

अला इन्ना औलिया अल्लाह ला ख़ौफ़ुन अलैहिम वलाहुम यहज़नून (सूरह यूनुस पारा नंबर 11 आयत नंबर (62) इस आयते करीमा में ख़ुदा का इनामो इकराम जो अपने ख़ास बन्दों यानी औलिया अल्लाह के लिए रखा गया है! देखिये कि अल्लाह फरमा रहा है की अल्लाह के दोस्तों को ना कुछ ख़ौफ़ और ना ग़म है। अल्लाह हु अकबर अल्लाह हु अकबर सब से पहले तो इनाम ख़ुदा की दोस्ती का मिल रहा है जो सब से बड़ा इनाम है अब दोस्त होगएं तो ज़ाहिर सी बात है की ख़ुदा के दोस्तों को भला कौन सा ग़म और ख़ौफ़ लाहक़ हो हाँ अलबत्ता उन लोगों को ज़रूर ख़बरदार किया गया है जो अल्लाह के दोस्तों से बुग़्ज़ो इनाद रखते हैं अल्लाह का फ़रमान है कि ख़बरदार जिसने मेरे दोस्तों से बुग़्ज़ रखा उससे मैं ऐलाने जंग करता हूँ। (बुखारी जिल्द 2 सफ़ा 263)

हदीस शरीफ़ है कि हज़रत अबु हुरैरह रज़िअल्लाहु अन्हु से रिवायत है की रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि कुछ ऐसे लोग हैं कि जिनके कपड़े तो फटे होते हैं बाल गर्द आलूद होते हैं की उनके ज़ाहिरी हाल को अगर ये दुनिया वाले देखें तो अपने दरवाज़ों पर खड़ा ना होने दे लेकिन ख़ुदा की क़सम ये जो कह दें तो वो हो जाये फिर आगे सहाबाकिराम से फ़रमाया कि तुम्हें मालूम है की अल्लाह जन्नत की बादशाहत किसे अता करेगा अपने इन दोस्तों (औलिया अल्लाह) को
(सही मुस्लिम जिल्द 4 सफ़ा 2024)

फ़िर ऐसी ही एक हदीसे पाक के रावी हज़रत सय्यदना उमर इब्न अल ख़त्ताब रज़िअल्लाहु अन्हु हैं आप फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया की अल्लाह के कुछ बन्दे ऐसे होंगे जो ना नबी होंगे और ना शोहदा लेकिन रोज़े क़यामत इनके क़द्रो मन्ज़िलत और मक़ामो मर्तबा देख कर नबी और शोहदा रश्क़ करेंगे! सहाबाकिराम ने पूछा या रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम वो कौन लोग होंगे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया की वोह लोग वो होंगे जो अल्लाह के लिये एक दूसरे को मुहब्बत करते हैं! अल्लाह की क़सम उनके चेहरे चौदहवीं रात के चाँद की तरह रौशन होंगे और वोह नूर के मिम्बरों पर बैठे होंगे उस दिन (रोज़े क़यामत) जब लोग ख़ौफ़ज़दा होंगे तो उन्हें कुछ ख़ौफ़ ना होगा और उस दिन (रोज़े क़यामत) जब लोग ग़मज़दा होंगे तो उन्हें कुछ ग़म ना होगा! फिर रहमतुललिल आलमीन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम ने ये आयते करीमा की तिलावत फ़रमाया अला इन्ना औलिया अल्लाह ला ख़ौफ़ुन अलैहिम वलाहुम यहज़नून!

बेशक हम गुनाहगार बन्दे इन बुज़ुर्ग हस्तियों के क़द्रो मन्ज़िलत और मक़ामो मर्तबा का अंदाज़ा करने से कासिर हैं कि जिनके हर दरजे पर फ़ाएज़ हर औलिया अपने शानो कमालात के साथ बहुत बुलंदो बाला हैं और जिनके नूर से ये सारा कुर्राए अर्ज़ मामूर है और जिनकी शुआओं से रूहे ज़मीं मुनव्वरो मुजल्ला है!

आज हम इन्हीं नुफ़ूसे क़ुदसियों में एक ऐसी ही हस्ती के ज़िक्रे ख़ैर से मुशर्रफ़ होने की सआदत हासिल कर रहे हैं जो सरज़मीने हिन्दुस्तान के एक ख़ित्ते जायस से ताल्लुक़ रखते हैं जिनका इस्म शरीफ़ हज़रत सैय्यद जलाल अशरफ़ अशरफ़ी जीलानी रहमतउल्लाह अलैह है और ये जायस तारीख़ के उन हर्फ़ों की ज़ीनत है जो किताब पद्मावत में दर्ज है और जिसे दुनिया मलिक मुहम्मद जायसी रहमतउल्लाह अलैह के नगरी से ख़ूब अच्छी तरह जानती

और पहचानती है और ये हज़रत मलिक मुहम्मद जायसी रहमतउल्लाह अलैह साहिबे सवानेह हज़रत सैय्यद जलाल अशरफ़ रहमतउल्लाह अलैह के जद्दे अमजद हज़रत सैय्यद मुबारक बोदले रहमतउल्लाह अलैह के मुरीद थें सुब्हान अल्लाह!

मेरी अल्लाह से बस यही दुआ है कि अल्लाह इस नाचीज़ की इस अदना सी कोशिश को अपनी बारगाह में क़ुबूल फ़रमाये और बसदक़े रसूले कौनैन सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम साहिबे सवानेह हज़रत सैय्यद जलाल अशरफ़ रहमतउल्लाह अलैह भी इस नाचीज़ के हालेज़ार पर करम की निगाह फरमाएँ आमीन या रब्बुल आलमीन

दुआ का तालिब. सैय्यद क़ुतुबउद्दीन मुहम्मद आकिब क़ुत्बी कड़वी।

मनक़बत शाने हज़रत सैय्यद जलाल अशरफ़ रहमतउल्लाह अलैह बक़लम सैय्यद गुल अशरफ़ किछौछवी क़ुद्दसिर्रहुल आली–

हर घड़ी दिल में है अरमाने जलाल अशरफ़
काश हम हो कभी मेहमान जलाल अशरफ़

वोह हैं मजज़ूबे इलाही वोह हैं आले अशरफ़
अल्लाह अल्लाह रे क्या शाने जलाल अशरफ़

उनके शैदाई हैं सब उनके भिखारी है सब
किस को हासिल नहीं फैज़ान जलाल अशरफ़

उनके मस्तों के सिवा समझेगा कैसे कोई
सबको मिलता नहीं इरफ़ान जलाल अशरफ़

दिल नहीं है की मेरी जान नहीं शैदा उन पर
जानो दिल दोनों है क़ुर्बान जलाल अशरफ़

वोह है ख़ुशबख़्त उन्हीं का है मुक़द्दर आला
जिनके हाथों में है दामाने जलाल अशरफ़

गुल तो फिर गुल है यहाँ कांटे भी हैं गुल जैसे
अल्लाह अल्लाह रे गुलिस्ताने जलाल अशरफ़

गुलशने पंजतने पाक के वो हैं एक फूल
किस से आख़िर हो बयां शाने जलाल अशरफ़

याद आता है मुझे चेहरा ए अनवर उनका
देख लूँ मैं रुख़े ताबाने जलाल अशरफ़

अशरफ़ी गुल मेरे होंठों पर है उनका चरचा
मेरी हस्ती है सनाख़्वाने जलाल अशरफ़!

'सवानेह हज़रत सैय्यद जलाल अशरफ़ रहमतउल्लाह अलैह'

बर्रे सग़ीर हिन्दोपाक में जो ख़ानदान हुज़ूर ग़ौसे आज़म दस्तिगीर शैख़ सैय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी रहमतउल्लाह अलैह का आबाद है उन्हीं में से एक शाख़ सरज़मीने किछौछा ज़िला फ़ैज़ाबाद में अर्से दराज़ से शादो आबाद था कि जिनके जद्दे आला हज़रत सैय्यद अब्दुल रज़्ज़ाक नूरुलऐन रहमतउल्लाह अलैह हैं जिन्हें जानशीनो ख़लीफ़ा हज़रत मख़दूम सैय्यद अशरफ़ जहाँगीर किछौछवी रहमतउल्लाह अलैह से दुनिया जानती है!

हज़रत सैय्यद अब्दुल रज़्ज़ाक़ नूरुलऐन रहमतउल्लाह अलैह के पाँच साहबज़ादे थें।

(1) हज़रत सैय्यद हसन
(2) हज़रत सैय्यद हुसैन
(3) हज़रत सैय्यद शम्सउद्दीन
(4) हज़रत सैय्यद फ़रीद
(5) हज़रत सैय्यद अहमद

हज़रत सैय्यद अहमद–. आप हज़रत अब्दुल रज़्ज़ाक़ नूरुलऐन के सबसे छोटे शहज़ादे हैं! आपकी विलादत सरज़मीने किछौछा में हुई और तालीमो तरबियत अपने वालिद बुज़ुर्गवार के ही दामने रहमत में पाई! फ़िर वालिद माजिद से बैतो ख़लाफत हासिल कर के सरज़मींने किछौछा से सरज़मींने जायस चले आयें जहाँ एक ख़ानक़ाह क़ायम कर के मसनदे रुश्दो इरशाद जमा दी कि जिसपर बैठ कर अपने नूर ज़ाहिरो बातिन से एक आलम को मुनव्वर फ़रमाया!

आपका विसाल जांयस में ही हुआ और अपनी ख़ानक़ाह में सुपुर्दे ख़ाक हुएं! आपके सिलसिलए औलाद में हज़रत सैय्यद मुबारक बोदले

रहमतउल्लाह अलैह व हज़रत सैय्यद कमाल रहमतउल्लाह अलैह तवलळुद हुएं जिनके औसाफ़ो कमालात का ज़िक्र हज़रत मलिक मुहम्मद जायसी ने अपनी किताब "पद्मावत" में कुछ इस तरह से किया है।

उन घर रतन एक निरमरा
हाजी शैख़ सभा गई भरु
तिन्ह घर दोइ दीपक उजियारे
पंथ देई कहँ दई असंवारे.
शैख़ मुबारक पुनिअ करा
शैख़ कमाल जगत निरमरा
दुऔ अचल धूव डोलहि नाहीं
कीन्ह खांभ दुँह जगत की ताईं
दुहुँ खम्भ टेकी सब मही
दुहुँ के भार सिस्टी थिर रही
जिन्ह दरसै औ परसै पाया
पाप हरा निर्मल भौ काया
मुहम्मद तहां निचित पथ
जिही संग मुरसिद पीर
जिही रे नाव करि आओ खेवक
वेग पाव सौ तीर

तर्जुमा : हज़रत सैय्यद अशरफ़ जहाँगीर रहमतुल्लाह अलैह के घराने में अनमोल रतन पैदा हुएं जिनका नाम सैय्यद हाजी था और जो तमाम आला औसाफ़ से आरास्ता थें! दुनिया के हिदायत के लिए सैय्यद हाजी के घर दो चिराग़ पैदा हुएं एक शैख़ मुबारक जो चाँद के तरह चमक रहें हैं और दूसरे शैख़ कमाल जो तमाम दुनिया में सब से ज़्यादा रौशन हैं! दोनों अपनी जगह क़ुतुब तारे की तरह क़ायम हैं! अल्लाह ने इन्हें सूरत और सीरत दोनों के हुस्न से नवाज़ा है! ये दोनों हस्तियां दो सुतून की तरह हैं जिन पर दुनिया क़ायम है! जिसने एक बार इनका दीदार किया या क़दम बोसी किया उसके गुनाह धुल गये! जिसे ऐसी नाव मिल जाए वोह गुनाहों के समुन्द्र को आसानी से पार कर लेता है। और इन्हीं हज़रत सैय्यद मुबारक बोदले रहमतुल्लाह अलैह के तेरहवीं पुश्त में हज़रत सैय्यद जलाल अशरफ रहमतुल्लाह अलैह पैदा हुएं जो एक मादरज़ाद वली मजज़ूब थें! आपका शजराए नसब वालिद के तरफ से इस तरह बयान होता है।

हज़रत सैय्यद जलाल अशरफ रहमतउल्लाह अलैह - इब्न
हज़रत सैय्यद हुज़ूर अशरफ रहमतउल्लाह अलैह- इब्न
हज़रत सैय्यद मुहम्मद अशरफ रहमतउल्लाह अलैह- इब्न
हज़रत सैय्यद तजम्मल हुसैन अशरफ रहमतउल्लाह अलैह- इब्न
हज़रत सैय्यद नूर अशरफ रहमतउल्लाह अलैह- इब्न
हज़रत सैय्यद मुहम्मद अशरफ रहमतउल्लाह अलैह- इब्न
हज़रत सैय्यद लाल अशरफ रहमतउल्लाह अलैह- इब्न
हज़रत सैय्यद लाड अशरफ रहमतउल्लाह अलैह- इब्न
हज़रत सैय्यद मुहम्मद वफ़ा अशरफ रहमतउल्लाह अलैह- इब्न
हज़रत सैय्यद बक़ा अशरफ रहमतउल्लाह अलैह- इब्न
हज़रत सैय्यद अबुल क़ासिम अशरफ रहमतउल्लाह अलैह- इब्

हज़रत सैय्यद लुत्फ़ अशरफ रहमतउल्लाह अलैह- इब्न
हज़रत सैय्यद जलाल सानी अशरफ रहमतउल्लाह अलैह- इब्न
हज़रत सैय्यद शाह मुबारक बोदले रहमतउल्लाह अलैह- इब्न
हज़रत सैय्यद शाह जलाल अव्वल रहमतउल्लाह अलैह- इब्न
हज़रत सैय्यद शाह हाजी क़त्ताल रहमतउल्लाह अलैह- इब्न
हज़रत सैय्यद शाह हाजी अहमद अशरफ जायसी रहमतउल्लाह अलैह- इब्न

हज़रत सैय्यद शाह अब्दुल रज़्ज़ाक नुरुल ऐन रहमतुल्लाह अलैह (ख़लीफ़ा व जानशीन हज़रत मख़दूम सैय्यद अशरफ़ जहांगीर किछौछवी रहमतउल्लाह अलैह)

आपका ननिआल– हिन्दो सिंध में जिन सदातो अशराफ की शुजाअत बुज़ुर्गी और ग़ैर मामूली कमालातों से सफ़े तारीख़ रौशन व ताबां है वो ख़ानवांदाऐ क़ुतबिया कबीरिया है की जिसके मौरिसे आला फ़ि सिंध (पाकिस्तान) बादशाहे औलिया व असफिया शहनशाहे वलायत ताजे अहले बैत इमामुल मुहद्दिसीन व ताबईन हज़रत सैय्यदना अब्दुल्लाह शाह ग़ाज़ी सरकार रहमतउल्लाह अलैह और मौरिसे आला फ़ि हिन्द (हिंदुस्तान) हज़रत सैय्यदना क़ुतुब अल अक़ताब ग़ौसुल आलमीन हिंदल वली सरकार मीर सैय्यद क़ुतुबउद्दीन मुहम्मद मदनी रहमतउल्लाह अलैह हैं जो फातेह कड़ा व मानिकपुर भी हैं और बक़ौले रसूले अक़दस सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम इस्लाम का परचम सरज़मीने हिन्द पर गाड़ने वाले भी हैं जैसा कि किताब बहरे ज़ख़्ख़ार और दीगर मोतबर किताबों में दर्ज है!

हज़रत सरकार सैय्यद क़ुतुबउद्दीन मुहम्मद अल मदनी रहमतउल्लाह अलैह हज़रत सैय्यदना अब्दुल्लाह शाह ग़ाज़ी सरकार रहमतउल्लाह अलैह जो हिन्दो सिंध के सबसे अव्वल सूफ़ी और बुज़ुर्ग हैं (आपकी मज़ारे मुजल्ला सरज़मीने कराँची पाकिस्तान

समुन्द्र किनारे वाक़े है जो मर्जए ख़लायक ख़ासो आम है) की ग्यारहवीं पुश्त में पैदा हुएं! आप हुज़ूर ग़ौसे आज़म शैख़ सैय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी रहमतउल्लाह अलैह के हक़ीक़ी भांजे थें!

आपने बहुक्मे रसूले अक़दस सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम हिंदुस्तान में इस्लाम का परचम लहराया और सरज़मीने कड़ा (कौशाम्बी) को अपनी रिहाइशगाह मुक़र्रर किया जहाँ आपकी मज़ार पुर अनवार मर्जए ख़लायक ख़ासो आम है!

हज़रत सरकार मीर सैय्यद क़ुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह के बाइसवें (22) पुश्त में हज़रत सैय्यद शाह ज़कीउद्दीन क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह पैदा हुएं जो एक आबीदो ज़ाहिद मुत्तक़ी परहेज़गार शब ज़िन्दादार और निहायत ख़िलवतनशीन बुज़ुर्ग थें! आप सज्जादा नशीन आस्ताना–ए–आलिया क़ुतबिया कबीरिया हुसामिया करीमिया चिश्तिया ख़ानक़ाह शरीफ़ मानिकपुर थें!

इन्हीं हज़रत सैय्यद शाह ज़कीउद्दीन क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह की शहज़ादी हज़रत बीबी सैय्यदा जमीला ख़ातून का निकाह हज़रत सैय्यद हुज़ूर अशरफ़ से हुआ कि जिनसे हज़रत सैय्यद जलाल अशरफ़ रहमतउल्लाह अलैह पैदा हुएं! अल्लाह हु अकबर! हज़रत सैय्यद जलाल अशरफ रहमतुल्लाह अलैह की ज़ात पाक हर सिफ़त से मुज़ैयन और हर ऐतबार से आला अरफ़ा थी और आप हमासिफ़त मौसूफ़ थें!

आपका शजराए नसब वालिदा की तरफ से इस तरह बयान होता है।

हज़रत सैय्यद शाह जलाल अशरफ़ रहमतउल्लाह अलैह- इब्न

हज़रत बीबी सैय्यदह जमीला ख़ातून क़ुतबिया रहमतउल्लाह अलैहा- बिन्त

हज़रत सैय्यद शाह ज़कीउद्दीन क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह (सज्जादा नशीन ख़ानक़ाह मानिकपुर)– इब्न

हज़रत पीरज़ादा सैय्यद शाह अबुल हसन क़ुत्बी शहीद मानिकपुरी रहमतउल्लाह अलैह (मुसन्निफ़ तारीख़ आईना–ए–अवध) – इब्न

हज़रत सैय्यद शाह मुहम्मद मेहदी बख़्श क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह (राईस–ए–कुर्राह सादात)– इब्न

हज़रत सैय्यद शाह करीम बख़्श क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह- इब्न

हज़रत सैय्यद शाह मुहम्मद हाशिम क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह- इब्न

हज़रत सैय्यद शाह फ़तेह मुहम्मद क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह-इब्न

हज़रत सैय्यद शाह ग़ुलाम मीर क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह- इब्न

हज़रत सैय्यद शाह मुहम्मद क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह- इब्न

हज़रत सैय्यद शाह पीर मुहम्मद क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह- इब्न

हज़रत सैय्यद शाह अब्दुल रसूल क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह- इब्न

हज़रत सैय्यद शाह हमज़ा क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह- इब्न

हज़रत सैय्यद शाह जलालउद्दीन जलाल क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह- इब्न

हज़रत सैय्यद शाह मुहम्मद इस्माईल क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह (बानी–ए– ख़ानक़ाह व दायरा कुर्राह सादात) इब्न

हज़रत सैय्यद शाह लाड क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह- इब्न

हज़रत सैय्यद शाह राजे क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह- इब्न

हज़रत सैय्यद शाह सैय्यद मियाँ क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह- इब्न

हज़रत सैय्यद शाह मूसा क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह- इब्न

हज़रत सैय्यद शाह ज़ियाउद्दीन क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह- इब्न

हज़रत सैय्यद शाह क़यामउद्दीन क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह- इब्न

हज़रत सैय्यद शाह सद्रउद्दीन क़ुत्बी मदनी रहमतउल्लाह अलैह- इब्न

हज़रत क़ुतुब–अल–अब्दाल क़ाज़ीउल–कुज़ात सैय्यद शाह अमीर रुक्नउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह- इन्न

हज़रत ग़ाज़ी– उल– ग़ज़वा– ए– कड़ा सैय्यद शाह अमीर निज़ामउद्दीन हसन मदनी शहीद रहमतउल्लाह अलैह- इन्न

हज़रत क़ुतुब–अल–अक़ताब ग़ौसुल आलमीन हिंदल वली हज़रत सरकार अमीर कबीर सैय्यद शाह क़ुतुबउद्दीन मुहम्मद अल मदनी अल हसनी अल हुसैनी अल कड़वी रहमतउल्लाह अलैह!

आपकी पैदाइश और आपके वालिदैन– आपकी पैदाइश सन 1935 ईस्वी में बमुक़ाम मख़दूमपुर उर्फ़ करीमनपुर ज़िला प्रतापगढ़ में हुई!

आपके वालिद मोहतरम का इस्मे गिरामी हज़रत सैय्यद हुज़ूर अशरफ़ रहमतउल्लाह अलैह था जो आलिम बाअमल आबिदों ज़ाहिद शब ज़िन्दादार बुज़ुर्ग थें! आपने अपने वालिद हज़रत सैय्यद मुहम्मद अशरफ़ रहमतउल्लाह अलैह के ख़लीफ़ा और जानशीन होकर मसनदे सज्जादगी को आरास्ता किया!

आपकी वालिदा माजिदा का इस्म शरीफ़ हज़रत बीबी सैय्यदा जमीला ख़ातून था जो निहायत आबिदा ज़ाहिदा शब ज़िन्दादार शौहरपरस्त निहायत सख़ी दरिया दिल ख़ातून थीं जिन्हें अपने वक़्त की राबिया बसरिया कहा जाए तो बेजा न होगा! परदे का आलम तो ये था कि घर में काम करने वाली ख़ादिमाओं से भी पर्दा करती थीं कि कहीं वोह दूसरे घरों में जाकर आपका तज़किरा न करें! आपके परहेज़गारी का तो ये आलम था कि घर में अकेली होतीं और बाहर कोई मुरीद या ख़ादिम हज़रत से मिलने के लिए आता और आवाज़ देता तो आप कभी नहीं बोलती थीं जिससे आने वाला ख़ुद समझ जाता था कि हज़रत घर में नही हैं और वोह लौट जाता! अल्लाह हु अकबर

बेशक ऐसे ही नेक सालेह लोगों से ऐसी बरगुज़ीदा शख़्सियतें पैदा होतीं हैं!

आपकी रिहाईश– दरगाह मख़दूम अशरफ़ जायस पर शाहान मुग़लिया की नज़रकरदह अराज़ियात व माफ़ियात थें! सन 1857 ईस्वी के ग़दर के बाद उनमें बहुत सारे मौज़ा निकल गयें और मोहल्ला शैख़ाना कज़्बा जायस हाजीपुर मख़दूमपुर उर्फ़ करीमनपुर बाक़ी रह गए थें! इन्ही में आपके दादा ने मौज़ा करीमनपुर में एक मकान बनवाया और रिहाईश शुरू कर दी लेकिन आपकी असली रिहाईशगाह और आपके आबाओ अजदाद का वतन जायस ज़िला अमेठी था जहाँ आज भी आपके ख़ानदान के लोग रहते हैं!

आपके बचपन के हालात– आप मादरज़ाद मजज़ूब वली थें और जिसके आसार माँ के गोद से ज़ाहिर होने लगे थें! मशहूर है की आपने नापाकी के हालत में कभी भी वालिदा माजिदा का दूध नहीं पिया! आपका बचपन बड़ा मासूमाना अंदाज़ में गुज़रा! आप बच्चों में खेलते तो आपका पसन्दीदा खेल ये होता की बच्चों को जमा करते और उनसे गुड़ मंगवाते और ख़ुद भी लाते कभी गुड़ आटा तेल वग़ैरा मंगवा कर बच्चों से ख़ुरमा बनवाते और ख़ुद भी शामिल होतें! ख़ुरमा बनाने के बाद मिलाद पढ़ते सलातो सलाम पढ़तें फिर ख़ुरमें पर फातेहा कर के बच्चों में तक़सीम करते थें! सारे बच्चे आपके पीछे पीछे चलतें और आपके इशारों पर चलतें और आपका एहतेराम करते थें! एक दफ़ा आपने अपने घर में फ़रमाया कि आपा मर गयीं! घर के लोगों ने मना किया कि क्या बक रहे हो ख़राब बात है आप ख़ामोश हो गयें! इत्तेफ़ाक़ से उसी दिन हज़रत मौलाना सैय्यद अकमल अशरफ़ किछौछवी शाम को जायस तशरीफ़ लाएं और उनकी ज़बानी मालूम हुआ कि आपकी बड़ी हमशीरा जिनका अक़्द सैय्यद मंज़ूर अहमद किछौछवी से हुआ था इंतेक़ाल हो गया!

इसी तरह एक दिन आपने अपनी सौतेली माँ के बारे में फ़रमाया जिनको आप बाजी कहते थें की बाजी आज क़ब्र में चली जाएँगी घर के लोगों ने आपको रोका कि ऐसा ना कहें! उस वक़्त आपकी वालिदा बिल्कुल तंदरुस्त थीं यकायक असर के वक़्त तबियत ख़राब हुई और मग़रिब से पहले ही उनका विसाल हो गया!

आपकी तालीमों तरबियत– आप कुछ बड़े हुएं तो वालिद साहब ने करीमनपुर के एक मदरसे में पढ़ने के लिए बैठाया और पढ़ाने की बहुत कोशिश किया लेकिन तालीम के तरफ आपका रुझान नहीं हुआ हज़ार कोशिशों के बावजूद आप पढ़ लिख नहीं सकें! करीमनपुर के रहने वाले नबी बख़्श साहब जो आपके वालिद के मुरीद और मुत्तक़ी परहेज़गार आदमी थें जिन्हें पद्मावत और हंसजवाहर मुँह ज़बानी याद थी! हज़रत इन्हीं के साथ मस्जिद में रहते और इनसे पद्मावत और हंसजवाहर के अशआर बड़ी शौक से सुनतें रहते थें जिसे सुनते सुनते अक्सर अशआर आपको भी याद हो गए थें!

जायस में सुकूनत– आपकी वालिदा मोहतरमा के विसाल के बाद आपके वालिद मोहतरम ने दूसरा निकाह किया और जायस में मुस्तक़िल तौर पर सुकूनत अख़्तियार कर लिया! आपके वालिद मोहतरम आपके सभी भाई बहनों में आपको महबूब रखते थें! आपके वालिद जब भी मुरीदों में जाते आपको अपने हमराह ले जाते थें! घर के सभी लोग आपको चाहते और आपका एहतेराम करते थें! जायस की जिस गली कूचे से आप गुज़रते थें लोग आपसे दुआ करवातें थें बच्चों और मरीज़ों को फुकवाते थें! आप मुहम्मद इस्हाक़ जर्राह मोहल्ला शैख़ाना वहाबगंज बाज़ार के यहाँ अक्सर तशरीफ़ ले जाते थें और उनकी बीवी हज़रत की बड़ी ख़िदमत करती थीं! हज़रत उस घर से बहुत मानूस थें और उन्हें ख़ूब नवाज़ा भी!

आपका हुलिया मुबारक– आपका क़द दरमियाना, बदन भरा हुआ, रंग सांवला, चेहरा भोला भाला मासूमाना रौनक़ दार, दाढ़ी घनी पुरनूर थी! आपकी आवाज़ मासूमाना पस्त और मुलायम थी! आप हमेशा अरबी पैजामा और लम्बा कुरता और दो पल्ली टोपी ज़ेबतन फ़रमाते थें!

आपका एख़लाक़ और आदात– आप ज़्यादा तर ख़ामोश रहते और टहलते रहते या दौड़ लगाते रहते थें और दहन मुबारक से ज़ी–ज़ी की आवाज़ निकालते रहते और कभी हाथों से इशारा भी फ़रमाते थे! आपकी गुफ्तुगू सुनने के लिए कान लगाना पड़ता था और गुफ्तुगू करते वक़्त ऐसा महसूस होता कि किसी छोटे बच्चे से गुफ्तुगू कर रहें है! हर किसी से गुफ्तुगू भी नहीं फ़रमाते थे! बस जिससे बे तकल्लुफ़ हो जाते और जो आपकी ख़िदमत करता सिर्फ़ उसी से आहिस्ता आवाज़ में गुफ्तुगू फ़रमाते थें! औरतों और ज़्यादा भीड़ से बहुत घबराते थें अलबत्ता जो औरतें आपकी ख़िदमत में लगी रहती थीं और जो बेतकल्लुफ़ हो जाती थीं उनसे भी गुफ्तुगू फ़रमाया करते थें! बच्चों को बहुत ज़्यादा प्यार करते थें और उनसे गुफ्तुगू भी ख़ूब मज़े से करते और उन्हें अपने पास से हटाते नहीं थें! आप अक्सर बच्चों के तरह रूठ जाते थें लोग अक्सर जानवरों और हाथी का तज़किरह कर के बहला फुसला कर गुफ्तुगू करते थें! जिस वक़्त ख़फ़ा हो जाते लोग बिलकुल ख़ामोश रहते! आप लोगों से भैया कह कर मुख़ातिब होते और किसी ज़रुरत या तकलीफ़ के वक़्त भी भैया आपकी ज़ुबान मुबारक से सरज़द होता था! आप जब तन्हाई में होते तो पद्मावत या हंसजवाहर के अशआर आहिस्ता आहिस्ता गुनगुनाते रहते थें! जिसको याद फ़रमाते उसका पूरा नाम लेते कभी किसी का आधा अधूरा नाम न लेते और ना ही कभी किसी का नाम बिगाड़ कर लेते थें! जानवरों की तस्वीर बहुत पसंद फ़रमाते थें कभी किसी जानवर की तस्वीर को हाथ लगाते तो फ़ौरन हाथ पीछे कर लेतें और ये कहते कि भैया काट लेगा! हाथी की सवारी बहुत पसंद थी! मिठाइयों में खोए की मिठाई पसंद फरमाते थें! गोश्त आपकी पसंदीदा ग़िज़ा थी आप फ़रमाते थें कि शेर जंगल का बादशाह है उसकी ग़िज़ा गोश्त है और मै अल्लाह का शेर हूँ इस लिए मुझे भी गोश्त पसंद है! अमीरों के कोठियों से ज़्यादा ग़रीबो के झोपड़े को पसंद फ़रमाते थें! आपको जो भी रूखा सूखा मयस्सर होता खा लेते थें कभी चीनी और बाजरे की रोटी की फ़रमाइश करते और ख़ूब शौक

से खाते थें! बीड़ी कसरत के साथ नोश फ़रमाते थें! आप का जब जहाँ जी चाहता पहुँच जाते थें! कोई नज़र पेश करता तो उसे अपने ख़ादिम को दे देते थें! जिसके यहाँ क़याम होता उसको बहुत मानते थें और चाहते थें कि वह एक लम्हे के लिए भी आँखों से ओझल न हो! बहुत सारा रुपय देख कर ख़ुश हो जाते और फ़रमाते भैया बहुत ज़्यादा रूपया है और गिनती इस तरह करते एक, दो, तीन, पाँच, सात, नौ, ग्यारह, तेरह, चौदह, सोलह अपनी आख़री उम्र तक बीस तक गिनती नही गिन पायें! आपने सतरह साल की उम्र में घर छोड़ दिया! हमेशा आलमे मुसाफ़ेरत और सैरो सैयाहत में रहें लेकिन जब भी घर पर कोई मुसीबत आ जाती या कोई हादसा हो जाता तो हज़रत अज़ ख़ुद बग़ैर किसी इत्तेला के घर पहुँच जाते थें!

आपके जज़्ब में इज़ाफ़ा– आपकी उम्र मुबारक जैसे जैसे बढ़ती जाती थी आपके जज़्ब में वैसे वैसे इज़ाफ़ा होता था! अब आप ख़िलवतनशीनी इख़्तेयार करने लगें और ख़ामोशी पसंद करने लगें! अक्सर आलमे जज़्ब में उठकर टहलने लगते और वीरानों और क़ब्रस्तानों में चले जाते और दौड़ लगाते और दहन मुबारक से ज़ी.ज़ी की आवाज़े निकालते!

आपका सिलसिला बैअतो ख़लाफत–आपका सिलसिला चिश्तिया निज़ामिया अशरफिया है! सिलसिलाए क़ादरिया से भी इजाज़त व ख़लाफत हासिल थी!

आपकी जानशीनी का वाक़ेया– एक साल आप बार बार फ़रमाते रहें की इस साल मैं गद्दी पर बैठूंगा और जायस के मकान के लिए फ़रमाते थें कि ये अब सूना हो जायेगा! उसी साल आपके वालिद मोहतरम १६ जून सन १९५८ ईस्वी बमुक़ाम जायस लू लगने की वजह से वफ़ात पा गयें! और आपने मसनदे सज्जादगी को आरास्ता किया!

आपके मोतक़िद और मुरीद– आपके मानने वालों मोतक़िद और मुरीदों की तायदाद बहुत वसीह है जो सुल्तानपुर, रायबरेली, प्रतापगढ़ के ज़िलों में फैली हुई है जिनमें लौहर, नियावां, छटई का पुरवा, रसूलपुर, बादल का पुरवा, भाई, मीरा मऊ, सेमरह, मख़दूमपुर, इमली गाँव, लाल खां का पुरवा, बहादुरपुर, बाज़गढ़, पूरबगाँव, बसावन का पुरवा, कोलारा, लालगंज, लमुहवा, पुरह मुरई, हुसैनपुर, मौहना, बैरीइतलवा, क़ाबिले ज़िक्र है! इसके अलावा लखनऊ, कानपूर, इलाहाबाद, मुम्बई, कलकत्ता वग़ैरह में भी आपके मुरीदीन हैं!

ग़ैर मुस्लिमों को आपसे अक़ीदत– आपने सिर्फ़ मुसलमानों ही को अपने सिलसिले से नहीं जोड़ा बल्कि ग़ैर मुस्लिमों को भी हल्क़ाए बगोशे इस्लाम किया! आपके अक़ीदतमंदों में अच्छी ख़ासी तायदाद ग़ैर मुस्लिमों की थी जो आपके झूठे खाने को अपने लिए तबर्रुख़ और प्रषाद समझते थें और आपके ख़िदमत को अपनी ख़ुशकिस्मती का ज़रिया मानते थें!

उलेमाएकिराम को आपसे अक़ीदत– आपके अक़ीदतमंदों में सिर्फ़ आम लोग ही नहीं बल्कि क़ुर्बोजवार के ज़्यादा तर उलेमाएकिराम भी शामिल थें जो हद दर्जा आपका एहतेराम करते थें और जिन्हें आपसे वालेहाना मुहब्बत और अक़ीदत थी! मशहूर है कि हज़रत हबीबुर्रहमान साहब रईस ए उड़ीसा जब भी सुल्तानपुर तशरीफ़ लाते तो आपकी ख़िदमत में ज़रूर हाज़री देते थें! साहिबे किताब मजज़ूबे कामिल नक़्ल फ़रमाते हैं कि अशरफ अहमद उर्फ़ मन्नू भाई बयान करते थे कि एक बार हज़रत मुजाहिदे मिल्लत साहब क़िब्ला सुल्तानपुर तशरीफ़ लायें, उस वक़्त हज़रत मेरे मकान पर तशरीफ़ फरमा थें! हज़रत मुजाहिदे मिल्लत साहब मेरे घर तशरीफ़ लायें और सलाम मसनून के बाद आपकी दस्तबोसी और क़दमबोसी फ़रमाया और आपका पैर दबाने लगें!

शेर मुहम्मद साहब मौज़ा लौहर बयान फ़रमाते थे कि एक मर्तबा जामिया अरबिया सुल्तानपुर का जलसा था मैं जलसा सुनने

गया था! जलसे में उस्ताज़ुल उलेमा हुज़ूर अब्दुल अज़ीज़ साहब भी जलवा अफ़रोज़ थें! हज़रत उस वक़्त जामिया अरबिया से मिले हुए क़ब्रस्तान में तशरीफ़ फरमा थें! हुज़ूर हाफ़िज़ ए मिल्लत हज़रत के पास तशरीफ़ लायें और हज़रत को सलाम किया हज़रत ने सलाम का जवाब दिया उसके बाद हुज़ूर हाफ़िज़ ए मिल्लत ने आगे बढ़कर आपकी दस्तबोसी फ़रमाई और चले गयें!

शेर मुहम्मद ख़ान साहब मौज़ा लौहार ने बयान किया है कि मैं हज़रत के साथ जामिया अरबिया सुल्तानपुर के जलसे में गया जो जामिया अरबिया सुल्तानपुर का पहला जलसा था! इसी जलसे में जामिया अरबिया का संग बुनियाद रखा गया! हज़रत स्टेज के सामने जलसे के बिलकुल आख़री सिरे पर कम्बल पर तशरीफ़ फरमा थें! प्रोफ़ेसर अब्दुल क़य्यूम और अल्लामा निज़ामी साहब की तक़रीरें हुई! आख़िर में हुज़ूर मुहद्दिसे आज़म स्टेज पर तशरीफ़ लाएं लेकिन कुर्सी ए ख़िताबत पर बैठने से पहले आपने ऐलान किया की हमारे ख़ानदान के एक मजज़ूब ए कामिल इस जलसे में मौजूद हैं जब तक वो स्टेज पर नहीं आएंगे मैं ख़िताबत नहीं करूँगा! वहां मौजूद सभी लोग इधर उधर देखने लगें यहाँ तक की सब की निगाह आप पर जम गयी! मौलाना सलीम साहब ने मुझसे कहा की हज़रत को स्टेज पर ले कर आओ! मैंने हज़रत से स्टेज पर चलने को कहा लेकिन हज़रत ने झिड़क दिया! फिर मौलाना सलीम साहब ख़ुद आएं आप को लेने के लिए लेकिन आप अपने जगह से हिले नहीं ये देख कर अल्लामा निज़ामी साहब भी आएं और हज़रत से स्टेज पर चलने की दरख़्वास्त की लेकिन हज़रत फिर भी अपनी जगह से ना उठे! बिलआख़िर हुज़ूर मुहद्दिसे आज़म रहमतउल्लाह अलैह आपके पास आने के लिए स्टेज से उतर पड़ें! जब आपने ये देखा तो फ़ौरन आप उठ खड़े हुएं और मुहद्दिसे आज़म रहमतउल्लाह अलैह की ख़िदमत में तशरीफ़ लाएं! जैसे ही आप क़रीब पहुँचें हज़रत मुहद्दिसे आज़म ने आपको अपने कलेजे से

लगा लिया और आपको स्टेज पर ले गयें! हज़रत थोड़ी देर स्टेज पर बैठे फिर अपनी जगह कम्बल पर आकर बैठ गयें!

अल्लामा हाश्मी मियां किछौछवी का बयान– यहाँ ये लाज़मी है की क़ारीनकिराम के दिलचस्पी के लिए अल्लामा हाश्मी मियां अशरफ़ी किछौछवी का वो बयान भी लिखता चलूँ जो अपने मुताल्लिक़ उन्होंने किताब मजज़ूब ए कामिल में दर्ज करवाया है! जिसे किताब के मुसन्निफ़ सैय्यद मौसूफ़ अशरफ़ बसखारवी मरहूम मग़फ़ूर ने कुछ इस तरह से पेश किया है–

हाश्मी मिया फ़रमाते हैं कि अल्हम्दुलिल्लाह आज तो मुझे करोड़ो मुसलमान जानते हैं! एशिया और यूरोप के लोग भी सूरातन वाक़िफ़ हैं! मगर ये बात उस वक़्त की है जब ख़ानदान की अकसरियत मेरे बेऐतेदालियों के वजह से मेरे किसी रौशन मुस्तक़बिल की उम्मीद से बिलकुल मायूस हो चुकी थी! वाक़ेआतन मेरा लड़कपन तूफ़ानख़ेज़ियों से भरा पड़ा था! किसी स्कूल कॉलेज और मदरसा में दो साल से ज़्यादा नहीं रह पाता था! मकतब अशरफिया किछौछा शरीफ से हटाया गया तो मुहम्मद हसन इण्टर कॉलेज जौनपुर पहुँचा वहां से हटाया गया तो नेशनल हायर सेकण्डरी स्कूल बनारस पहुँचा वहां से हटाया गया तो हॉबर्ट त्रिलोक नाथ इण्टर कॉलेज माण्डा पहुँचा! वहाँ से मेरा ज़मीर कुछ ऐसा बेदार हुआ की मैंने दीनी तालीम हासिल करने का फैसला कर लिया! मदरसा जामिया नईमिया में ऐडमीशन हुआ वहाँ भी दो साल नहीं रुक पाया था कि मुझे जामिया अशरफिया मुबारकपुर ज़िला आज़मगढ़ जाना पड़ा! दो साल वहां भी चैन सुकून से ना गुज़र सका तक़दीर आज़माने के लिए जामिया अरबिया सुल्तानपुर पहुँचा! मैं उसे एक मदरसा समझ कर दाख़िल हुआ किसे मालूम था की कोई नज़रे कीमियाअसर मेरे ज़िन्दगी की तमाम बेऐतेदालियों और कमज़ोरियों को एक बामक़सद सिम्त अता कर देगी! मेरे साथ मेरे भांजे मौलाना सैय्यद तनवीर अशरफ़ भी ज़ेरे

तालीम थें! एक दिन पूरे मदरसे में एक शोर उठा की हज़रत जलाल शाह तशरीफ़ लाएं हैं! तनवीर मियां पहले ही से वाक़िफ़ थें ये सुनते ही बेअख़्तियार खड़े हो गयें! मैंने पूछा ये कौन बुज़ुर्ग हैं? तो उन्होंने कहा कि मामू ये मजज़ूबे कामिल हैं! हुज़ूर अशरफ रहमतउल्लाह अलैह के साहबज़ादे और जानशीन हैं! चलिए आप भी मुलाक़ात कीजिये! हम दोनों कमरे से निकल कर नीचे उतरें और हॉल में पहुँचे तो देखा एक मजमा लगा हुआ है! जलवत में ख़लवत का ये नज़ारा मेरे ज़िन्दगी का पहला वाक़ेआ था! मेरी निगाह हज़रत से हज़रत की निगाह मुझसे टकराई वोह मुस्कुराएं और आहिस्ता से अब्दुल शकूर से बोले की हमारे घर का बच्चा है जिसे मैंने ख़ुद भी सुन लिया!

बग़ैर किसी तार्रुफ़ के एक ऐसी चीज़ को देख लेना जो मख़्फ़ीतरीन है यानी मेरी नसबी निस्बत से ज़ाहिरी ज़राये के बग़ैर वाक़िफ़ हो जाना इनके बस्र का कमाल ना था इनके बसीरत का कमाल था!

मैं तालिबे इल्मी के दौर में मुक़र्रिर तस्लीम किये जाने लगा था! कोई जलसा छोटा बड़ा मदरसे या शहर का मेरे बग़ैर नहीं होता था! उस दिन भी मदरसा का सालाना जलसा था जिसमें मेरी तक़रीर रखी गयी थी! हज़रत के ख़ादिम अब्दुल शकूर ही से पता चला की हज़रत ने गाँव छोड़ने से पहले ही फरमा दिया था की चलो जामिया अरबिया में हमारे ख़ानदान का लड़का ही तक़रीर करेगा! मुझे याद है जब तक मेरी तक़रीर होती रही हज़रत पूरी ख़ुदाई से बेनियाज़ रहें! तक़रीर के बाद पूरी शफ़क़त से उन्होंने मुझसे एक बात फ़रमाई जो ख़ुदा और मेरे अलावा कोई दूसरा नहीं जानता था! इरशादेगिरामी समझने में जब मुझे ज़हमत हुई और उनकी आहिस्तगी और इशारा मेरे लिए दुशवारी का सबब रहा तो उन के ख़ादिम अब्दुल शकूर ने वज़ाहत करते हुए कहा की हज़रत कह रहें हैं की आप कुटिया चलें जाएँ और वहां के तालाब का पानी पी लें तो आपकी बीमारी ठीक हो जाएगी! मैं अपने आपको उस नज़र से ना बचा सका जिसने मेरे अन्दरूनख़ाना का सही

जायज़ा ले लिया! मैं साथ गया पानी पिया शिफ़ा पाई! फैज़ सिमनानी उनके तालाब के शक्ल में मिला! अब तो ये आलम था कि जहाँ हज़रत वहाँ मेरी तक़रीर और जहाँ मेरी तक़रीर वहाँ हज़रत!

एक मर्तबा रईस सुल्तानपुर जनाब असीर ख़ान साहब के कारख़ाने के क़रीब जमील मिस्त्री के दुकान में हज़रत ने अज़ ख़ुद मेरे लिए एक नक्श लिखा फिर उसी नक्श पर गोल दायरा बनाया! अब तक वोह ख़ामोश थें लेकिन दस्तख़त करने के बाद फ़रमाया तुम को हम मुक़र्रिर का ताज बनाते हैं!

मैंने अब्दुल शकूर साहब से दस्तख़त और गोल दायरे के बारे में पूछा कि आज तक मैंने किसी को ऐसा नक्श बनाते हुए नहीं देखा मामला क्या है? अब्दुल शकूर भाई ने बताया की मजबूर होकर लिखने का अंदाज़ और है और मसरूर होकर लिखने का और है! उस दिन के बाद मैं नहीं जानता कि मुझे अपने लिए बेताज होने का एहसास कहीं पैदा हुआ!

एक दफा हज़रत किछौछा तशरीफ़ लाएं और हज़रत मख़दूम सिमनानी रहमतउल्लाह अलैह के बारगाह में हाज़िर हुएं! हाज़री के बाद मेरे ग़ैर मौजूदगी में घर तशरीफ़ लाएं! मेरे घर वालों को शदीद एहसास था की हाश्मी मियां होते तो हज़रत और मसरूर होते लेकिन हज़रत ने इस तरह से क़याम फ़रमाया जैसे वोह मेरे मुन्तज़िर हैं! वाक़ेआतन बिला किसी प्रोग्राम के मैं तक़रीबन दो घण्टे बाद घर पहुँच जाता हूँ! हज़रत ने देख कर कलाम तो नहीं फ़रमाया लेकिन मुस्कुराएं! उनका मुस्कुराना आम मुस्कुराहटों से और कलाम आम कलामों से बहुत मुख़्तलिफ़ था! बहुत ही सादगी थी!

आज मैं अपनी तमाम सलाहियतों के साथ सरे. अक़ीदत ख़म करके अपने उस फैज़ बख़्श मोहसिन मजज़ूबे कामिल को सलाम करता हूँ!

आपका कश्फ़–ओ–करामात– हज़रत सैय्यद जलाल अशरफ़ रहमतउल्लाह अलैह की कश्फ़.ओ.करामात हद्दे शुमार से बाहर हैं जिसे इस अदना किताब में दर्ज करना तवालत का बाइस होगा

चुनाँचे यहाँ हम उन्हीं करामातों का ज़िक्र कर रहें हैं जो आपके मुताल्लिक़ मशहूर और मारूफ़ है!

(1) मशहूर है कि आपके मुरीद मुहम्मद याक़ूब ख़ान मरहूम उनके बेटे मुहम्मद तैयब ख़ान माहे मऊ ज़िला अमेठी बयां करते हैं की एक दफ़ा हज़रत मेरे घर में तशरीफ़ फरमा थें! सावन भादौ की काली रात थी! चिराग़ जल रहा था जो हवा के एक झोंके के बाद बुझ गया! मैं हज़रत की ख़िदमत में लगा हुआ था हज़रत का पैर दबा रहा था! हज़रत मुझको बार बार ताक़ीद कर रहे थें कि भैया दीवार के तरफ़ ना जाना वहां कुछ है मुहम्मद तैयब ख़ान कहते हैं कि जब हज़रत ने कई बार इस जुमले को दोहराया तो मुझे भी उलझन पैदा हुई! चिराग़ बुझ गया था मैंने माचिस तलाशा और लालटेन जलाया! जब रौशनी हो गयी तो मैंने दीवार के तरफ क़दम बढ़ाया और देखा की उसमें एक होल है जिसमें एक काला बिच्छू बैठा है और वोह ज़ोर ज़ोर से उसमें डंक मार रहा है! मैंने उसे बाहर निकाला और उसे मार दिया! सावन भादौ की काली रात में काले बिच्छू को देख लेना ये उनकी बसारत नहीं बल्कि बसीरत का कमाल था!

(2) मुहम्मद वकील ख़ान इब्न मुहम्मद क़ासिम ख़ान मरहूम सेमरा परगना अठेहा ज़िला प्रतापगढ़ जिनका पूरा घराना हज़रत का मुरीद अक़ीदतमन्द और चाहने वाला था! वोह बयान करते थें कि एक बार हज़रत मेरे घर पर मौजूद थें! हम लोग हज़रत की ख़िदमत पर लगे हुए थें! हज़रत ने हम लोगों से कहा कि भैया शिकार कर लाओ! मै और मेरे भाई सईद ख़ान साथ में थें! मैंने देखा की अरहर के एक खेत में मुर्ग़ाबी बैठी है! मैंने उस पर निशाना साधा और तीन बार ट्रिगर दबाया मगर मेरी बंदूक न चल सकी न काम कर सकी मैंने जब ग़ौर करके मुर्ग़ाबी के आगे देखा तो मेरे होश उड़ गयें सामने एक औरत बैठी हुई घास छील रही थी अगर गोली चल जाती तो यक़ीनन वोह औरत

भी उसके ज़द में आ जाती! मैंने फिर उस मुर्ग़ाबी को वहां से उड़ाया तो वोह एक आम के दरख़्त पर जाकर बैठ गयी! मैंने निशाना लगाया और निशाना लग गया मुर्ग़ाबी तड़पती हुई नीचे आ गिरी मैंने उसे ज़बह किया और हज़रत के पास लेकर हाज़िर हुआ! इधर हज़रत की निगाहें पहले ही सब कुछ देख चुकी थीं! मैं जब हज़रत की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो हज़रत ने मुझसे पूछा भैया शिकार मिल गया मैंने हज़रत के सामने शिकार हाज़िर किया! हज़रत ने कहा भैया आज बड़ा ग़ज़ब हो जाता अगर पहली बार में तुम्हारी बंदूक चल जाती तो, क्यूंकि जब तुमने पहली बार गोली चलाने की कोशिश की थी तो तीन बार ट्रिगर दबाया था तो मैंने उसे रोक लिया था! अगर गोली चल जाती वोह औरत ज़द में आजाती! अल्लाह तआला ने अपने कामलीन बन्दों को कैसी ताक़त दे रखी है वोह दूर से होने वाले वाक़ेआत को अपनी निगाहों से देख भी रहें हैं और उसे अपने क़ुदरते कामिला से रोक भी रहें हैं! ये उनकी वलायत और बसीरत का खुला हुआ सबूत है!

(3) मर्ज़ काफ़ूर हो गया–. मुहम्मद रफ़ीक़ माहे मऊ ने बयान किया की मेरे लड़के मुहम्मद इश्तियाक़ को कालरा हो गया था यकायक तबियत बहुत ज़्यादा ख़राब हो गयी थी यहाँ तक की हाथ पैर ठण्डे हो गयें!

मैं एक गिलास में पानी लेकर हज़रत की कुटिया पर पहुंचा! हज़रत कुटी के बाहर ही तशरीफ़ फरमा थें! हज़रत के पास मुहर्रम अली पेश इमाम भी मौजूद थें! मैंने हज़रत से कहा मेरे लड़के की तबियत बहुत ख़राब है बचने की कोई उम्मीद नहीं पानी दम फरमा दीजे और मैं रोने लगा! हज़रत कुछ बोले नहीं और थोड़ी दूर जाकर दौड़ लगाना शुरू कर दिया! थोड़ी देर के बाद तशरीफ़ लाएं और चारपाई पर बैठ गयें! मैंने हज़रत से पानी दम करने के लिए फिर दरख़्वास्त की, आप चारपाई से फिर उठे और दौड़ लगाने लगें उसके बाद चारपाई पर तशरीफ़ लाएं और लेट गयें और मुंह पर चादर डाल लिया! मुहम्मद

रफ़ीक़ का बयान है मै कुछ देर तो खड़ा रहा फिर मैंने सोचा अब हज़रत पानी नहीं दम फरमाएंगे अभी मैंने ये सोचा ही था के हज़रत उठ बैठे और मुझसे पानी दम करने के लिए माँगा और फ़रमाया जाओ ठीक हो जायेगा! मैंने घर जाकर लड़के को पानी पिलाया बच्चे ने फ़ौरन आँखे खोल दिया और उठ बैठा और मर्ज़ काफूर हो गया!

(4) क़त्ल का मुजरिम बरि हो गया– अब्दुल शकूर माहे मऊ ने बयान किया था कि प्रताप भुजवा जो की अशरफपुर का रहने वाला था और ९९ वे डकैतों में माख़ुज़ था और एक क़त्ल के केस में भी मुलव्विस था! पुलिस उसे पकड़ कर थाने ले गयी और इस क़दर मारा की हाथ पैर की हड्डी हड्डी टूट गयी और सुल्तानपुर चालान कर दिया! वोह उस वक़्त जेल में था! उसकी माँ हज़रत के पास आई और हज़रत को एक रुपये नज़राना किया और अपने बेटे का हाल बयां किया और दुआ की दरख़्वास्त किया! हज़रत ने फ़रमाया वह बिल्कुल ठीक हो जायेगा और छूट जायेगा! हज़रत की दुआ से वोह तमाम डकैतों से बरि हो गया और सबसे हैरत अंगेज़ बात ये हुई की क़त्ल वाला केस जिसमें ये माख़ुज़ था ऐसा दबा कि फिर चला ही नहीं और उसके तमाम साथियों को उम्र क़ैद की सज़ा हो गयी!

(5) बे औलाद को औलाद मिल गयी– सुल्तान अहमद मौज़ा मीरा मऊ ज़िला रायबरेली ने बयान किया कि हमारे यहाँ एक शख़्स मुहम्मद यार नामी हज़रत के मुरीद थें! इनके कोई औलाद नरीना (बेटे) नही थें! वोह हज़रत के पास आएं और तालिब ए दुआ हुए! हज़रत ने फ़रमाया तुम्हारे बच्चा होगा चुनांचे चंद ही दिनों के बाद हज़रत की दुआ से इनकी बीवी हामला हुईं! अब इन्होंने हिफाज़त हमल के लिए कुछ दूसरे लोगों से भी गंडा तावीज़ बनवायें लेकिन बिल आख़िर हमल साकित हो गया! दूसरी बार जब हज़रत को मीरा मऊ लाया गया तो मुहम्मद यार की बीवी ख़ैरुन्निसा आईं और हज़रत के सामने रोने लगीं! हज़रत ने मुझसे फ़रमाया चलो भैया भाग चलें

इसका ईमान दुरुस्त नहीं है और आबादी से बाहर एक बाग़ में चले गयें! वोह औरत भी हज़रत के साथ हो ली! आपने मुझसे फरमाया ये तो भैया यहाँ भी आ गयी! मैंने फ़रमाया हज़रत ये आपकी ख़ादिमा है आपको किस तरह छोड़ सकती है! आपने उस से कहा दूर हो जा! औरत थोड़ी दूर जाकर बैठ गयी फिर आहिस्ता आहिस्ता हज़रत के पास पहुंची और आपका पैर दबाना चाहा हज़रत ने पैर खींच लिया लेकिन मेरी सिफ़ारिश से हज़रत ने पैर फैला दिया! औरत हज़रत का पैर दबाने लगी और रोने लगी उसी वक़्त उसके शौहर मुहम्मद यार भी पहुंच गयें! हज़रत ने मुझसे फ़रमाया लो ये भी आ गया! हज़रत ने फिर फ़रमाया इस से कह दो कि दौड़ता हुआ जाये और चारपाई ले कर आये! हज़रत का ये हुक्म सुनकर मुहम्मद यार दौड़ता हुआ गया और चारपाई ले आया! हज़रत ने फ़रमाया ख़ाली चारपाई ले कर आया है कह दो बिस्तर भी लेकर आये ये सुनकर वोह बिस्तर भी ले आया! फिर आपने उस से तकिया मंगवाया फिर लोटा और डोरी इसी तरह पांच बार उसे दौड़ाया! बेचारे का दौड़ते दौड़ते बुरा हाल हो गया था! फिर आपने मुझसे फ़रमाया की ये औरत क्या कहती है? तो मैंने औरत से कहा कि अब अपना मुद्दा बयान करो तो उसने आपसे एक बेटा होने के दुआ के लिए दरख़्वास्त किया! हज़रत ने फिर मुझसे फ़रमाया भैया इसका ईमान दुरुस्त नहीं है! औरत ये बात सुनकर रोती रही तो हज़रत ने औरत से फ़रमाया अपना ईमान दुरुस्त रखना जाओ अल्लाह ने तुमको औलाद दिया और हज़रत मख़दूम साहब ने और मैंने यही कलमात आपने दो बार फ़रमाया चुनांचे उसके बाद उस औरत के यके बाद दीगरे दो बच्चे पैदा हुएं जो शिफ़ात अहमद और सिराज अहमद नाम से मौजूद थें!

(6) गुस्ताख़ी करने वाला हलाक हो गया– हाफ़िज़ मुहम्मद ज़हीर उद्दीन साहब मौज़ा कोटवाड़ा का ख़ाना हसनपुर ज़िला सुल्तानपुर हज़रत के मुरीदों में थें! आप बयान करते थें कि एक

बार हज़रत इनके गावँ तशरीफ़ लाएं! फ़िरोज़पुर का एक बदअक़ीदा शख़्स जिसका नाम ज़फर था और जिसने कोटवा में आलू का खेत ख़रीदा था! वोह आलू खुदवा चुका था अब फ़िरोज़पुर आलू ले जाने की तैयारी में था! हाफ़िज़ ज़हीरउद्दीन के चचा इत्तेफ़ाक़िया उसके पास पहुंचे और वहां हज़रत का ज़िक्र आ गया उसने हज़रत के शान में कुछ ना ज़ेबा अल्फ़ाज़ कहें, हाफ़िज़ साहब के चचा आग बगूला हो गए और कहने लगें की तू मरदूद है एक सैय्यद ज़ादे को बुरा भला कहता है, अल्लाह के एक वली के शान में गुस्ताख़ी करता है, तबाह हो जायेगा और ये कहकर उसके पास से उठकर चले गए! उस वाक़ेआ के दूसरे दिन मालूम हुआ कि वोह फ़िरोज़पुर गया और वहां उसका क़त्ल हो गया!

(7) नाबीना को बीनाई मिल गयी– मुहम्मद यूनुस तहसील मुसाफ़िर ख़ाना ज़िला सुल्तानपुर ने बयान किया है कि हज़रत मकान पर तशरीफ़ फरमा थें, नाटे नामी एक शख़्स मौज़ा एसौली का परेशान हाल हज़रत को सुनकर मेरे मकान पर आया और रोने लगा और मुझसे कहने लगा की मेरे नौजवान लड़के जिसकी उम्र तक़रीबन १७, १८ साल है उसकी दोनों आँखों की रौशनी बीमारी के वजह से ख़त्म हो गयी है! हज़रत से मेरे लड़के के लिए दुआ करवा दीजे! हज़रत ने मुहम्मद यूनुस से पूछा भैया ये क्या कह रहा है? मुहम्मद यूनुस ने हज़रत से सारा वाक़ेआ बयान किया और कहा की हज़रत ये बहुत ग़रीब है और इस वक़्त बहुत परेशान है इसके लड़के के लिए दुआ फरमा दीजिये! हज़रत ने फ़रमाया उसकी आँखें अल्लाह ने चाहा ठीक हो जाएगी! फिर उसे पानी दम कर के पिलाने और आँखों में डालने के लिए दिया और साथ में एक तावीज़ भी लिखकर दिया! नाटे अपने मकान गया और फ़ौरन हज़रत की दी हुई तावीज़ अपने लड़के के गले में पहनाया और पानी के चंद क़तरे उसके आँखों में डाला और पिलाया उसी वक़्त लड़के को कुछ फायदा महसूस हुआ! इसी तरह तीन दिन तक यही अमल करता रहा यहाँ तक की उसका लड़का तीन दिन में

बिल्कुल ठीक हो गया और उसकी आँखों में रौशनी आ गयी! चौथे दिन नाटे और उसका लड़का जो बीनाई से महरूम हो गया था हँसते मुस्कुराते हुए हज़रत के क़दम बोसी के लिए आएं!

(8) पचीस हज़ार के ज़ेवरात मिल गयें– छोटे लाल सुनार साकिन बंधवा हसनपुर की सर्राफ़ा की दुकान बाज़ार साहेबगंज मुसाफ़िर ख़ाना में थी! एक दिन का वाक़ेआ है की वोह मोटर साईकिल पर पचीस हज़ार के ज़ेवरात वग़ैरा लेकर क़स्बा एसौली दुकानदारी के ग़रज़ से जा रहे थें की मोटर साईकिल से उनका सामान कहीं गिर गया! जब वोह एसौली घाट पर पहुंचे तो देखा सामान मौजूद नहीं फ़ौरन सामान की तलाश में वापस हुएं लेकिन सामान नहीं मिला! उसे मालूम हुआ की यहाँ एक बहुत बड़े बाबा मुहम्मद यूनुस के मकान पर आये हुएं हैं! वोह मुहम्मद यूनुस के मकान पर हाज़िर हुआ और मुहम्मद यूनुस से सारा वाक़ेआ बयान कर दिया और हज़रत से दुआ करने की सिफ़ारिश किया! मुहम्मद यूनुस ने हज़रत से वाक़ेआ बयान किया और छोटे लाल के लिए दुआ की दरख्वास्त की! हज़रत ने फ़रमाया जाओ तम्हारा सारा सामान मिल जायेगा और एक तावीज़ भी लिखकर दिया! छोटे लाल तावीज़ लेकर चला गया! दूसरे दिन जिस शख़्स ने सामान पाया था ख़ुद छोटे लाल के दुकान पर जाकर सारा सामान बिलकुल उसी तरह छोटे लाल के हवाले कर दिया! छोटे लाल ने एक हज़ार रुपये उसको दिया और फ़ौरन हज़रत के ख़िदमत में हाज़िर हुआ और कहने लगा हज़रत ने जो फ़रमाया था वोह पूरा हुआ फिर उसने हज़रत की बारह दरी में पांच हज़ार ईंटें नज़र किया!

(9) दूध का दरिया जारी हो गया– मुहम्मद इल्यास ख़ान मौज़ा छितौना ज़िला सुल्तानपुर बयान करते थें की जब जब हज़रत मेरे घर तशरीफ़ लाते तो मैं दूध से आपकी ख़ातिर करता था! हज़रत मेरे घर को दूध वाला घर कहते थे! मैंने कसाई के यहाँ से एक ख़ाली भैंस ख़रीदा था लेकिन हज़रत की दुआ से बाद को मालूम हुआ कि

उसके पेट में बच्चा है! फिर तो ये आलम हुआ की मेरे घर में दूध का दरिया जारी हो गया और कोई ऐसा बर्तन नहीं रहा जिसमें दूध न हो और उस भैंस से उस वक़्त पांच भैंस हो गयी थी जो सब की सब दूध देती थीं!

(10) बहरा सुनने लगा– रहमतुल्लाह क़व्वाल लंभुआ मौज़ा ज़िला सुल्तानपुर बयान करते थें की मेरे उस्ताद मंज़ूर अहमद उज़्मी रेलवे मुलाज़िम थें उनकी सुनने की ताक़त बिल्कुल ख़त्म हो गयी थी और वह बिल्कुल बहरे हो गए थें! कई जगह इलाज करवाया बड़े से बड़े डॉक्टर को दिखाया लेकिन कोई फ़ायदा नहीं हुआ और माली हालत भी ख़राब हो गयी यहाँ तक की नौकरी भी ख़तरे में पड़ गयी बहुत परेशान थें! एक दिन मैं उनकी अयादत में गया तो उन्होंने मुझसे पूरे हालात बयान किये! मैंने उनसे हज़रत का तज़किरह किया और अपने मकान पर बुलाया वोह मेरे मकान पर आएं और मै उनको लेकर सुल्तानपुर गया! हज़रत उस वक़्त रफ़ीक़ पेशकार मोहल्ला ख़ैराबाद सुल्तानपुर के दरवाज़े पर तशरीफ़ फरमा थें मुझको देखकर बहुत ख़ुश हुएं लेकिन मेरे उस्ताद को देख कर मुंह फेर लिया और उनसे हाथ भी नहीं मिलाया मेरे उस्ताद इस बात पर रोने लगें लेकिन मैंने उन्हें तसल्ली दिया! हज़रत ने मुझको कुछ कलाम सुनाने का हुक्म दिया! मैंने अपने साथियों को बुलाया जो सुल्तानपुर में रहते थें और कलाम सुनाना शुरू किया! थोड़ी देर में बहुत से लोग आ गयें और एक अच्छी ख़ासी महफ़िल हो गयी! ऐन उसी वक़्त जबकि पूरी महफ़िल आलमे वज्द में थी और हज़रत के ऊपर एक इस्तग़राकी कैफ़ियत तारी थी मैं यकायक ख़ामोश हो गया! हज़रत ने फ़रमाया और सुनाओ मैंने कहा हुज़ूर मेरे उस्ताद पर नज़रे करम फरमाएं ये सब इन्हीं का दिया हुआ है वरना मैं किसी क़ाबिल ना था! मैं सिर्फ इसीलिए हाज़िरे ख़िदमत हुआ हूँ! हज़रत ने फ़ौरन कड़वा तेल मंगवाया और उसे दम फ़रमाया और फ़रमाया इसे कान में डालो! मैंने उसी वक़्त

थोड़ा तेल कान में डाला उसके बाद आपने एक तावीज़ भी अता फ़रमाई और फ़रमाया जाओ सब ठीक हो जायेगा! उसके बाद हम लोग हज़रत की दस्तबोसी कर के शहर चले गयें और एक होटल में बैठकर चाय पीने लगें! मेरे उस्ताद ने मुझसे कहा अब मैं अपने अंदर काफी फ़र्क़ महसूस कर रहा हूँ प्यालियों की खनक मुझे सुनाई दे रही है! कुछ ही दिनों के बाद वोह बिल्कुल ठीक हो गयें!

(11) इलेक्शन दोनों बराबर हो गयें– जनाब निसार अहमद साहब मौज़ा नियावां ज़िला सुल्तानपुर ने बयान किया की सन १९६१ ईस्वीं में हम और हाजी रियासत अली साहब परधानी के लिए खड़े हुए थे! हाजी रियासत साहब ने हज़रत से दुआ की दरख़्वास्त की हज़रत ने फ़रमाया जाओ कामियाब हो जाओगे! उधर मैंने भी अपने हक़ में दुआ करवाया हज़रत ने मेरे लिए भी कामियाबी की दुआ फ़रमाई! चुनांचे जब इलेक्शन हुआ और वोट शुमार किये जाने लगें तो हाजी रियासत साहब की कामियाबी के आसार ज़ाहिर होने लगें और उनका पल्ला भारी दिखाई देने लगा यहाँ तक कि लोगों में शोर होने लगा की हाजी रियासत साहब जीत गयें लेकिन दोनों की गिनती के बाद सिर्फ एक वोट से मेरी कामियाबी का ऐलान हुआ! निसार अहमद साहब का बयान है की दर हक़ीक़त हम दोनों ही बराबर थें और १४७ वोट मुझे और १४७ वोट हाजी रियासत साहब को मिले थें लेकिन मैंने कुछ दे दिलाकर एक वोट का अपनी तरफ इज़ाफ़ा करवा लिया था! हाजी रियासत साहब ने सुल्तानपुर मेरे ख़िलाफ़ (petition) अर्ज़ी दायर किया और मेरे कामियाबी को चैलेंज किया! बिल आख़िर वहां से फैसला हुआ की दोबारा इलेक्शन किया जाए तो मैंने इलाहबाद हाई कोर्ट में उस फैसले के ख़िलाफ़ अपील किया वहां से भी यही फैसला बहाल रहा!

(12) इंटरव्यू में फेल ले लिया गया– जनाब शमशाद अहमद साहब मुन्सिफ़ सद्र आज़मगढ़ साकिन प्रतापगढ़ सिटी

बयानकरते थें की मैं मुन्सिफ़ के इम्तेहान में बैठा था! उस दरमियान उर्स चल रहा था तो मैं उर्स में शामिल हुआ और हज़रत से दुआ का ख़्वास्तगार हुआ! सुबह जब मैं जाने लगा तो मेराज मियां के हमराह हज़रत से मुलाक़ात को गया! हज़रत उस वक़्त इस्हाक़ ज़र्राह के घर में आरामफ़रमा थें! उस वक़्त सुबह के चार बजे थें! मैंने हज़रत से मुलाक़ात किया और दुआ की दरख़्वास्त की! हज़रत उस वक़्त मूड में थें थोड़ी देर ख़ामोश रहें फिर फ़रमाया जाओ इम्तेहान में पास हो जाओगे! मैं हज़रत की दस्तबोसी के बाद मकान चला आया और इम्तेहान में पास हो गया लेकिन इंटरव्यू में फेल हो गया! मैंने अपने दिल में सोचा कि हज़रत ने फ़रमाया था की मुन्सिफ़ हो जाऊंगा और इंटरव्यू में फेल हो गया हूँ अब देखो क्या होता है! लेकिन मुझे यक़ीन कामिल था की मैं ज़रूर ले लिया जाऊंगा वरना हज़रत हरगिज़ ना फरमातें चुनांचे चंद ही दिन बाद बग़ैर किसी इंटरव्यू के ले लिया गया!

(13) दमे का मर्ज़ ख़त्म हो गया– मुहम्मद यूनुस मुसाफ़िर ख़ाना बयान करते थें की विशम्भर दयाल श्रीवास्तव टीचर ए0 एच0 इण्टर कॉलेज मुसाफ़िर ख़ाना का मकान मक़बरह और बारहदरी के बिल्कुल क़रीब है! एक दिन उनके दरवाज़े पर एक बुढ़िया बैठी हुई थी मास्टर साहब अपने मकान से बाहर निकले तो उस बुढ़िया से ख़ैर ख़ैरियत पूछा तो उसने बताया की हमको दमे का मर्ज़ है ज़रा दम लेने के लिए बैठ गयी हूँ! मास्टर साहब ने उस बुढ़िया से पूछा कि दवा नहीं करती हो क्या? उसने जवाब दिया बहुत दवा किया लेकिन कुछ आराम नहीं मिला! मास्टर साहब ने कहा एक दवा हमारे कहने से कर लो शायद आराम मिल जाये! बुढ़िया ने पूछा वो कौन सी दवा है मास्टर साहब ने कहा बाबा जलाल अशरफ की बारह दरी बन रही है उसकी मट्टी लेकर जाओ और थोड़ी थोड़ी खाया करो! बुढ़िया उस जगह गयी और थोड़ी मट्टी वहां से ले लिया और अपने घर चली गयी! उस वाक़ेआ के तीसरे दिन मेरी मास्टर साहब से मुलाक़ात हुई इत्तेफ़ाक़ से वह बुढ़िया भी दूर से आते दिखाई दी जब बुढ़िया

क़रीब आ गयी तो मास्टर साहब ने उस से पूछा की तुम्हारी तबियत कैसी है? तो उसने कहा मुझे ऐसा महसूस होता है जैसे मुझे कभी मर्ज़ था ही नहीं और बाबा की वलायत का इक़रार करने लगी!

(14) इरादतमंद को पोस्टमैन की जगह दिला दी– मुबीन अहमद ख़ान मौज़ा छटई के पुरवा हज़रत के इरादतमंदों में शामिल थें! बयान करते थें की डाकख़ाना लाल के पुरवा में पोस्टमैन की जगह ख़ाली थी! उस जगह के लिए बहुत से लोग कोशिश में लगे हुए थें और लम्बी रिशवत देने को तैयार थें! मैंने भी अल्लाह का नाम लेकर उस जगह की दरख़्वास्त दे दी! उसी दरमियान हज़रत छटई के पुरवा तशरीफ़ लाएं! मैं हज़रत के ख़िदमत में गया और अर्ज़ किया की मैंने पोस्टमैन के लिये दरख़्वास्त दी है लेकिन मेरे लिये जाने की कोई उम्मीद नहीं इसलिए की बहुत से लोग उस जगह के लिए कोशिश कर रहे हैं और रिशवत भी देने को तैयार हैं मेरे लिए दुआ फ़रमाइये! हज़रत ने फ़ौरन एक तावीज़ लिख कर मुझे दिया और फ़रमाया कि मैं तुमको पोस्टमैन बनाता हूँ! मुबीन अहमद फ़रमाते हैं कि लोग हज़ार मुझसे कहते रहें की तुम नहीं लिए जाओगे लेकिन मुझे यक़ीन कामिल था की हज़रत की बात टल नहीं सकती मैं ज़रूर ले लिया जाऊंगा चुनांचे ऐसा ही हुआ मैं ले लिया गया! हज़रत की दुआ से पोस्टमैन बन गया!

(15) चक्की का पुक पुक करके बंद हो जाना– अब्दुल यार ख़ान छटई के पुरवा बयान करते हैं की यार मुहम्मद और इमाम रज़ा ने छटई के पुरवा के पूरब जानिब एक चक्की लगवाई थी! इमाम रज़ा की वालिदा हज़रत के पास आईं और हज़रत से पूछने लगीं की चक्की चलेगी की नहीं! हज़रत ने फ़रमाया 'पुक पुक कर के बंद हो जाएगी' बिल आख़िर यही हुआ हज़ार कोशिशों के बाद भी जब चक्की चलती तो पुक पुक कर के बंद हो जाती थी! वही चक्की जब दूसरे जगह लगाई गयी तो चलने लगी!

आपकी कुटियाँ– कई मक़ामों पर आपकी कुटियाँ बनी हुई है जिनमें आप अक्सर क़याम करते थें! ये कुटियाँ आपकी यादगार हैं!

मौज़ा करीमनपुर ज़िला प्रतापगढ़ मौज़ा छटई के पुरवा ज़िला सुल्तानपुर, माहे मऊ ज़िला सुल्तानपुर और मुसाफ़िर ख़ाना ज़िला सुल्तानपुर में ख़ास तौर पर आपके इसरार पर कुटियाँ बनाई गयीं जिनसे आज तक हज़रत का फैज़ जारी और सारी है!

सैरो सैयाहत– आप अच्छी ख़ासी जायदाद ज़मीन के मालिक थें लेकिन आपने अपनी जायदाद से एक पैसा भी नहीं लिया! घर बार जायदाद अज़ीज़ों अक़ारिब में छोड़कर ज़िन्दगी के ज़्यादा तर अय्याम ग़रीबुल वतनी और सैरो सैयाहत में बसर कर दिया मख़लूक़े ख़ुदा की ख़िदमत और हिदायत में सर्फ़ कर दिया! आप के उम्र के ज़्यादा तर अय्याम छटई का पुरवा, माहे मऊ, नियावां, मीरा मऊ, लौहर वग़ैरा में गुज़रे!

छटई का पुरवा– ये वो बस्ती है जहाँ की पूरी आबादी आपके वालिद के हल्क़ा.ए.इरादत में शामिल थी! यहाँ आप मुहम्मद इब्राहीम और मुहम्मद क़ासिम मौकेरी भाइयों के यहाँ रुकते थें जिनका पूरा घर आपकी ताज़ीम करता था! यहीं आपकी पहली कुटी आपके हुक्म से बन कर तैयार हुई जिसमे आप मुहम्मद क़ासिम के हमराह रहते थें!

लौहर– लौहर ज़िला सुल्तानपुर का एक बड़ा गाँव है! यहाँ के तक़रीबन सभी लोग हज़रत के हल्क़ा.ए.इरादत में दाख़िल थें! यहाँ हज़रत के आबाओ अजदात भी तशरीफ़ लाते थें इसी लिए यहाँ का बच्चा.बच्चा हज़रत के घर के बच्चे.बच्चे का एहतेराम बजा लाता रहा है! इसी बस्ती के हौसलामंद लोगों ने हज़रत के दादा हज़रत सैय्यद मुहम्मद अशरफ़ के ज़माने में पंद्रह बीघा ज़मीन लंगर.ख़ाने में दे दी थी! हज़रत यहाँ अब्दुल लतीफ़ मरहूम के घर में क़याम फ़रमाते थें! अब्दुल लतीफ़ हज़रत की ख़िदमत का बड़ा हक़ अदा करते थें! शेर मुहम्मद साहब भी हज़रत से बहुत अक़ीदत रखते थें और यही वजह थी कि अब्दुल लतीफ़ मरहूम के बाद हज़रत अगर किसी से मानूस थें

तो वो शेर मुहम्मद साहब थें! लौहर में हज़रत ने दो तीन साल क़याम फ़रमाया और फैज़ का दरिया बहा दिया जिससे ख़ल्क़े ख़ुदा ख़ूब सैराब हुई!

नियावां– मौज़ा नियावां ज़िला सुल्तानपुर वो बस्ती है जहाँ के लोग आपके बाप दादा के ज़माने से आपके सिलसिला से जुड़े थें! हज़रत अक्सर यहाँ तशरीफ़ लाते थें! मुहम्मद ख़लील हज़रत के ख़िदमत गुज़ारों में थें जिनके घर हज़रत का क़याम होता था!

एक बार की बात है कि मुहम्मद ख़लील हज़रत को अपने घर लाएं उस वक़्त मुहम्मद ख़लील की बीवी हालत ए हमल में थी! मुहम्मद ख़लील के कोई बेटा ना था इसलिए हज़रत से दुआ के ख़्वास्तगार हुए और इरशाद फ़रमाया की उसका नाम भी तजवीज़ फरमाएँ! हज़रत ने फ़रमाया कुलसूम या फ़ातिमा रख देनाएअब तो मुहम्मद ख़लील के हाथ पैर फूलने लगें कि मैं क्या चाहता था और क्या हो गया! चंद दिनों बाद उनके घर बेटी पैदा हुई जिसका नाम कुलसूम रखा गया! इसके बाद इनके घर एक और बेटी पैदा हुई जिसका नाम फ़ातिमा रखा गया! दो बेटियों के बाद मुहम्मद ख़लील के घर में फिर विलादत के आसार ज़ाहिर हुएं! मुहम्मद ख़लील हज़रत के ख़िदमत में हाज़िर हुए और हज़रत से बेटे के लिए दुआ करवाया और उसका नाम तजवीज़ करने की इल्तेजा की! हज़रत ने इस बार लड़के का नाम रखा और ऐसा लम्बा नाम रखा की जिसके तीन जुज़ होते थें! उसके बाद मुहम्मद ख़लील के घर तीन बेटे यके बाद दीगरे पैदा हुएं!

माहे मऊ में आपका क़याम– हज़रत जहाँ भी तशरीफ़ ले जाते लोग पता लगा कर दूर दराज़ से पहुंच जातें और अपने हक़ में दुआ करवाते और आपकी दुआ से अपना मक़सद पा लेते! एक बार आप छटई के पुरवा में क़याम फरमा थें कि अब्दुल शकूर माहे मऊ से तशरीफ़ लाएं! हज़रत से मुलाक़ात का शर्फ़ हासिल हुआ और आपके मुरीदो मोतक़िद हो गयें और ऐसे हज़रत के दीवाने हुए कि रोज़ छटई

का पुरवा तशरीफ़ लातें हज़रत की ख़िदमत करते और चले जातें कभी अर्ज़े मुद्दे की जसारत भी ना होती! एक बार मुहम्मद इब्राहीम के लड़के भगोले ने कहा हज़रत इनको अपने घर जाने की इजाज़त दे दीजिये और इनको दुआ दे दीजे कि इनके घर एक बेटा हो जाये क्यूंकि इनके घर छे बेटियां हैं! हज़रत ने फ़रमाया अल्लाह ने तुझको लड़का अता किया है और तेरा ख़ानदान क़यामत तक रहेगा! फिर फ़रमाया की हज़रत मख़दूम साहब और ग़ौस पाक का हुक्म हो गया है अब्दुल शकूर को लड़का मिल गया है! चंद दिनों बाद अब्दुल शकूर के यहाँ एक लड़का पैदा हुआ जिससे हज़रत के साथ उनकी मुहब्बत और बढ़ गयी और वोह हज़रत को माहे मऊ अपने मकान ले आएं!

सन १९६८ ईस्वीं में हज़रत पहली बार माहे मऊ तशरीफ़ लाएं और यहाँ अब्दुल शकूर और मुहम्मद याक़ूब के घर क़याम फ़रमाया! चंद दिनों में पूरा गाँव हज़रत के अक़ीदतमंदों में हो गया! हज़रत को ये जगह भी पसंद आई और कुछ अर्से यहाँ भी क़याम फ़रमाया! हज़रत आबादी से दूर नहर उस पार एक बाग़ में तशरीफ़ ले जातें और वहां दौड़ लगाते! उस बाग़ के शुमाल मशरिक़ में एक ख़ित्ता ज़मीन ख़ाली पड़ी थी और वहीँ एक पुख़्ता कुआँ भी था! हज़रत को ये जगह बहुत पसंद थी! हज़रत ने यहाँ अब्दुल शकूर और मुहम्मद याक़ूब को एक कुटी बनाने का हुक्म दिया! सं १९७१ ईस्वीं में आपके मुरीदों के मदद से एक कुटिया तैयार की गयी! यहाँ हज़रत चार.चार छे.छे महीना आराम फरमा होतें थें!

मीरा मऊ में आपकी तशरीफ़आवरी– ये मौज़ा भी आपके हल्क़ा–ए–इरादत में दाख़िल था और यहाँ के लोग भी आपके जांनिसारों और अक़ीदतमंदों में शुमार होते थें! यहाँ के लोग आपको साल में एक बार या दो बार अपने यहाँ ज़रूर लाते थें! आप यहाँ सुल्तान अहमद के मकान क़याम फरमा होते थें!

सुल्तानपुर– ये वो शहर है जहाँ हज़रत अक्सर और बेशतर आया करते थें! यहाँ हर मज़हबो मिल्लत के लोग आपके अक़ीदतमंद थें! ग़ैर मुस्लिमों में जमुना प्रसाद चूने वाले और राम सुन्दर आपके ख़ास अक़ीदतमंदों में से थें! यहाँ आप अब्दुल मजीद उर्फ़ बन्ने भाई के मकान पर क़याम फरमाते थें फिर बाद में अशफ़ाक़ अहमद ख़ान

उर्फ़ मन्नू भाई मोहल्ला शाहगंज जमीला मंज़िल में क़याम फ़रमाने लगें! आप जामिया अरबिया और पाँचों पीर अक्सर तशरीफ़ ले जाया करते थे!

जामिया अरबिया सुल्तानपुर– जब आप सुल्तानपुर तशरीफ़ ले जाते तो जामिया अरबिया ज़रूर तशरीफ़ ले जाते थें! यहाँ के तमाम उलेमा तुलबा व मुदर्रिसीन और ख़ुद मोहतमिम जामे अरबिया मौलाना सलीम साहब हद दर्जे आपका ऐहतिराम फ़रमाते थें! हज़रत जामे अरबिया के सालाना जलसे में ज़रूर शिरकत फ़रमाते थें! जामिया अरबिया के उलेमा व तुलबा हज़रत से दुआऐं और तावीज़ात लेतें और आपकी ख़िदमत करते थें!

सफ़र कानपूर– सुल्तान अहमद ख़ान मौज़ा मीरा मऊ बयान करते थें कि एक बार हज़रत मेरे हमराह कानपूर तशरीफ़ ले गयें वहां ज़हीर अहमद, मुहम्मद इस्हाक़ जर्राह जायस के भांजे के क्वार्टर पर क़याम फरमा थें! दूसरे दिन कुछ क़व्वाल आएं और हज़रत को कुछ कलाम सुनाने की ख़्वाहिश ज़ाहिर की! हज़रत ने फ़रमाया मैं हज़रत मख़दूम जाजमऊ के आस्ताने पर हाज़री देने जा रहा हूँ! कल सुनूँगा! दूसरे दिन जाजमऊ से हज़रत वापस हुएं और क़व्वाल आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुएं! दस बजे दिन में क़व्वाली शुरू हुई लेकिन हज़रत को उनका कोई कलाम पसंद नहीं आया! क़व्वालों ने मुझसे पूछा हज़रत कैसा कलाम पसंद फ़रमाते हैं, मैंने कहा आपके जद अमजद हज़रत मख़दूम अशरफ़ सिमनानी रहमतउल्लाह अलैह के शान में सुनाओ! क़व्वालों ने मख़दूम अशरफ़ रहमतउल्लाह अलैह के शान में कलाम पढ़ना शुरू कर दिया! हज़रत झूम उठें! नोटों की बारिश शुरू हो गयी! महफ़िले क़व्वाली अभी शबाब पर थी की अचानक पुलिस ने छापा मार दिया और ज़हीर अहमद को गिरफ़्तार कर लिया और बहुत से लोगों के नाम नोट कर लिया! जुर्म ये था की पर्मीशन के बग़ैर क़व्वाली हो रही थी! हज़रत ने पूछा ये कौन हैं? मैंने कहा दरोग़ा और पुलिस वाले हैं आपके मेज़बान को पकड़ लिया है!

आपने मुझसे फ़रमाया जाकर उनसे कह दो उनको छोड़ दें लेकिन मेरी हिम्मत नहीं पड़ी! हज़रत ने तीन बार यही फ़रमाया! बिलआख़िर मैंने हज़रत की दस्बोसी किया और डरते हुए दरोग़ा के पास गया और हज़रत का फ़रमान सुना दिया! दरोग़ा बोला ये कानपूर है यहाँ ना जाने कितने ऐसे खाने कमाने वाले आते जाते रहते हैं! हज़रत दूर खड़े थें! मैंने देखा अचानक हज़रत के तेवर बदलने लगें और आप सड़क पर दौड़ लगाने लगें और दहन मुबारक से ज़ी.ज़ी की आवाज़ निकालने लगें ये देख कर दरोग़ा और पुलिस वाले बदहवास हो गए! दरोग़ा ने फ़ौरन ज़हीर अहमद को छोड़ दिया और पुलिस को लेकर वहां से चला गया! दूसरे दिन दरोग़ा हज़रत के पास आया और माफ़ी का तलबगार हुआ और क़व्वाली का पर्मीशन दिलवाया लेकिन हज़रत ने फिर क़व्वाली नहीं सुना और चले आएं!

लम्भुआ ज़िला सुल्तानपुर– इस बस्ती में भी हज़रत के मुरीदो मोतक़िद कसरत से थें! अव्वल आपकी शर्फ़ बैत जिसको हासिल हुई वो रहमतउल्लाह नामी शख़्स थें और सबसे पहले हज़रत ने इन्हीं के घर क़याम फ़रमाया! धीरे धीरे ये पूरा गाँव हज़रत के हल्क़ा–ए–इरादत और बैअत में शामिल हो गया! यहाँ हज़रत ज़िन्दगी के आख़री अय्याम में तशरीफ़ लाएं इस वजह से यहाँ के लोगों को आपकी ख़िदमत का ज़्यादा मौक़ा ना मिल सका लेकिन उसके बावजूद आपने यहाँ ख़ूब फ़ैज़ो करम का दरिया बहाया!

ज़ाहिद हुसैन साहब ने बयान किया कि मेरे चार बच्चे पैदा हुएँ लेकिन चारो फौत हो गयें! एक बार हज़रत, मूसा भाई के हमराह लम्भुआ तशरीफ़ लाएं! हज़रत की ख़ुशी के लिए लम्भुआ बाज़ार में मेरे दरवाज़े के सामने महफ़िले सिमाअ का एहतेमाम हुआ! महफ़िले सिमाअ के बाद हज़रत की ख़िदमत में मैंने अपनी दरख़्वास्त पेश किया और तालिबे दुआ हुआ! हज़रत जज़्ब की हालत में उठें और सड़क पर दौड़ लगाने लगें और इसी आलम में फज्र का वक़्त हो गया, उस वक़्त हज़रत ने फ़रमाया जाओ बच्चा पैदा होगा और महफ़ूज़ रहेगा! आपने एक तावीज़ भी दिया! उसके बाद मेरे दो बच्चे पैदा हुएं वाजिद हुसैन और मुहम्मद अनीस और हज़रत की दुआ से दोनों बा हयात रहें!

सफर बम्बई– एक बार आप अब्दुल शकूर के हमराह बम्बई तशरीफ़ ले गयें! बम्बई में भी आपके मुरीदीन अच्छी ख़ासी तायदाद में मौजूद थें! यहाँ हज़रत ने दो दिन मदनपुरा सायरा मंज़िल में क़याम किया और जनाब मुहम्मद मुस्तक़ीम साहब के मेहमान रहें! लौहर के जनाब ख़लील भाई और ज़हीर उद्दीन भाई के इसरार पर हज़रत कुर्ला क़ुरैश नगर तशरीफ़ ले गयें! वहां के लोगों ने हज़रत को हाथों हाथ लिया और आपकी बड़ी खिदमत किया! क़याम के दौरान आपने हज़रत हाजी अली, हज़रत मख़दूम माहिमी, हज़रत हाजी मलंग के आस्तानों पर हाज़री भी दिया! एक दिन आप रानी बाग़ चिड़िया घर तशरीफ़ ले गयें! हज़रत को जानवरों से बहुत लगाव था! आप चिड़िया घर में तमाम जानवरों को देख रहे थें देखते देखते आप वहां पहुचें जहाँ लोग हाथी की सवारी कर रहे थें! आपको हाथी की सवारी बहुत पसंद थी लेहाज़ा हाथी देखकर आपने उस पर बैठने की ख़्वाहिश ज़ाहिर किया! फीलबान को बुलाया गया वो हाथी लेकर आया लेकिन जब हाथी सामने आया तो आपने उस पर बैठने से इन्कार कर दिया और फ़रमाया की इसने एक मुसलमान का ख़ून किया है! तहक़ीक़ के बाद मालूम हुआ कि वाक़ई उस हाथी ने एक मुसलमान का ख़ून किया था!

जलील अहमद कुर्ला क़ुरैश नगर बयान करते थें की हज़रत बम्बई से वतन जाने वाले थें और मेरी गाड़ी पासिंग में खोली गयी थी! मैंने हज़रत से दुआ करवाया की गाड़ी पास हो जाये! हज़रत ने फ़रमाया तुम्हारी गाड़ी पास हो जाएगी!मैं गाड़ी लेकर ताड़देव आर०टी०ओ० ऑफिस पहुंचा तो चौहान इंस्पेक्टर ने गाड़ी फ़ेल कर दिया! मैं दोबारा गाड़ी लेकर फिर पहुंचा तो पाटेकर इंस्पेक्टर ने गाड़ी फ़ेल कर दिया! मैं बहुत हैरान कि ये कैसे हो गया बहरहाल फिर मैं गाड़ी कुर्ला आगरा रोड कॉल टैक्स पेट्रोल पम्प ले गया और वहां याक़ूब फेड गाड़ी में काम करने लगा! वहां मैं एक दरख़्त की शाख़ पकड़ कर खड़ा था की मैंने देखा चौहान और पाटेकर दोनों स्कूटर पर

बैठकर सामने सड़क से गुज़र रहे हैं, जैसे ही मेरे सामने से गुज़रे टायर सलामत और ट्यूब फट गया दोनों स्कूटर से गिर पड़ें! मैंने आगे बढ़कर दोनों को उठाया! जब उनके होश हवास दुरुस्त हुए तो मेरे गाड़ी के काग़ज़ात देखें और आर०टी०ओ० ऑफिस बुलाकर गाड़ी पास कर दिया!

औलियाएकिराम के आस्तानों पर आपकी हाज़री– आपको औलियाए कामलीन के आस्तानों पर हाज़री का शर्फ़ भी हासिल हुआ और इस सिलसिले में आपने दूर नज़दीक के कई सफ़र किये! हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाह अलैह अजमेर शरीफ़, हज़रत ख़्वाजा क़ुतबउद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाह अलैह व हज़रत निज़ामउद्दीन औलिया रहमतुल्लाह अलैह देहली, हज़रत मख़्दूम शाह हुसामुल हक़ हुसामी रहमतुल्लाह अलैह व हज़रत मख़्दूम शाह पीर क़ासिम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह व हज़रत मख़्दूम शाह पीर करीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह ख़ानक़ाह शरीफ़ मानिकपुर, हज़रत मख़्दूम अशरफ़ रहमतुल्लाह अलैह किछौछा, हज़रत शाह मीना रहमतुल्लाह अलैह लखनऊ, हज़रत हाजी मलंग रहमतुल्लाह अलैह कल्यान, हज़रत हाजी अली रहमतुल्लाह अलैह व हज़रत मख़्दूम माहिमी रहमतुल्लाह अलैह मुम्बई, हज़रत बाबा ताजउद्दीन रहमतुल्लाह अलैह नागपुर, हज़रत हाजी वारिस अली शाह रहमतुल्लाह अलैह देवा शरीफ़, हज़रत साबिर पाक रहमतुल्लाह अलैह कलियर शरीफ़, हज़रत मख़्दूम जाजमऊ रहमतुल्लाह अलैह, हज़रत शाह अब्दुल लतीफ़ रहमतुल्लाह अलैह मेहँदीपुर और इसके अलावा भी आपको कई आस्तानों पर हाज़री का शर्फ़ हासिल था!

उर्स और मेलों के तक़रीबात– आप साल भार भले ही कही रहतें लेकिन उर्स के अय्याम में जायस ज़रूर तशरीफ़ ले आते थें! दरगाह मख़्दूम अशरफ़ जायस के उर्स की २७ और २९ मुहर्रमुल हराम

की शाम को उर्स की सारी तक़रीबात आप ही के सरपरस्ती में होती थी! आप ही महफ़िल की सदारत फ़रमाते थे और मसनदे सज्जादगी को ज़ीनत बख़्शते थें! पूरे मरासिम उर्स की अदाएगी के दरमियान आप निहायत पुर सुकून और संजीदा रहते थें! आपको उर्स बहुत पसंद था और इसी लिए बड़े शौक़ से उर्स की तैयारी फ़रमाते थें!

आपके मुरीदों में उर्स– उर्स हज़रत मख़्दूम अशरफ़ जायस के अलावा आप अपने मुरीदों में जब चाहते उर्स का ऐलान कर देते थें! मुरीदीन फ़ौरन उर्स की तैयारी में लग जाते थें और पूरे ऐहतेमाम के साथ उर्स किया जाता था! माहे मऊ छटई के पुरवा मीरा मऊ में हर साल चाँद के मुख़्तलिफ़ तारीखों में उर्स आज भी हज़रत की यादगार है जो पूरे जोशो ख़रोश के साथ मनाया जाता है!

छटई के पुरवा का मेला– हज़रत के क़याम के दौरान जब हाजतमंदो मरीज़ों और दुआ कराने वालों का सिलसिला शुरू हो गया तो आप इससे परेशान हो गयें! एक दिन हालते जज़्ब में आपने फ़रमाया कि जो इस पोखरे में नहायेगा वो अपना मक़सद मुराद पा लगा! ये बात जंगल की आग के तरह फैल गयी और हर तरफ़ से जौक दर जौक लोग यहाँ आने लगे जिसने धीरे धीरे मेले की शक्ल अख़्तियार कर लिया! यहाँ जो भी आता अपना मक़सद मुराद पा लेता था! यहाँ आपसे बेपनाह करामातें सादिर हुईं हैं! आपका दरियाए फ़ैज़ अभी शबाब पर था की लोगों ने यहाँ गड़बड़ी शुरू कर दिया जिससे आप नाराज़ हो कर करीमनपुर चले आएं और फ़रमाया ये मेला चंद दिनों में ख़त्म हो जायेगा!

करीमनपुर का मेला– आप छटई के पुरवा से करीमनपुर चले आएं और यहाँ मक़ाम टहिया पर कुटी बनवाकर रहने लगें! रफ़्ता रफ़्ता यहाँ भी हाजतमन्दों की भीड़ लगने लगी यहाँ तक की चंद

दिनों में यहाँ भी मेला लगने लगा! आप तंन्हाई और यकसोई के लिए वीरानों को पसंद फ़रमाते लेकिन ख़ल्के ख़ुदा आपके इर्द गिर्द मेला लगा लेतें! चंद ही दिनों में आप यहाँ से भी दिल बर्दाश्ता हो गएँ और लौहर चले गएँ!

आपकी तावीज़ात– आप अनपढ़ महज़ थे लेकिन बावजूद इसके ऐसी तावीज़ात लिखते थें कि बड़े बड़े हैरान रह जाते थें! आप बच्चों या ख़ादिमों के इसरार पर काग़ज़ क़लम मंगवाते और तावीज़ लिखते थें! जिससे बहुत ज़्यादा ख़ुश हो जाते तो उस पर दस्तख़त फ़रमाते थे और एक दायरह बनाते और फ़रमाते थे की मोहर लगा दिया है! आपकी तावीज़ तिरयाख़ का काम करती थी!

आख़री सफ़र– नूर मुहम्मद उर्फ़ ननकू जोरई के पुरवा के साथ मौज़ा सिमरा वकील के घर से हज़रत मार्च १९७८ ईस्वीं में मुसाफ़िर ख़ाना तशरीफ़ लाएं! ये हज़रत का आख़री सफ़र था! यहाँ आपने मुहम्मद यूनुस के घर पर क़याम फ़रमाया! मुसाफ़िर ख़ाना में हज़रत के क़याम का ये पहला इत्तेफ़ाक़ था! मुसाफ़िर ख़ाना के लोगों ने हज़रत की ख़िदमत में कोई कमी नहीं छोड़ी और इन्तेहाई मुहब्बत और ख़ुलूस से पेश आएं! ख़ास तौर पर मुहम्मद यूनुस और उनकी बीवी बच्चों ने हज़रत की बड़ी ख़िदमत किया! यहाँ हज़रत ने ज़िन्दगी के आख़री अय्याम गुज़ारे और मुसलसल तीन महीने तशरीफ़ फरमा रहें! यहाँ के सभी लोग हज़रत के हल्क़ाए इरादत में दाख़िल हो गए! यहाँ भी हज़रत से लातायेदाद करामातें ज़ाहिर हुईं और बेशुमार ख़ल्के ख़ुदा फ़ैज़याब हुई!

मक़बरह और बारहदरी की संग बुनियाद– हज़रत एक दिन आबादी से बाहर रेलवे स्टेशन के जुनूब में तशरीफ़ ले गयें! आपको यहाँ ज़मीन का एक टुकड़ा पसंद आ गया! हज़रत ने यहाँ अपना मक़बरह और उसके साथ बारह दरी तामीर कराने के लिए हुक्म दिया! ये ज़मीन एक नेक दिल ख़ातून ज़ौजा महबूब अली की थी! उनको जब ये मालूम हुआ की हज़रत को मेरी ज़मीन पसंद आई है तो वोह ख़ुद हज़रत के पास आईं और उस ज़मीन को हज़रत की नज़र पेश कर दिया! हज़रत को ज़मीन इस क़दर पसंद थी कि आप जब आबादी के अंदर तशरीफ़ लें जाते तो अपनी चारपाई आबादी के किनारे बिछवाकर उसी ज़मीन को देखते रहते और फ़रमातें इस पर अल्लाह की रहमत होगी! यहाँ नूर बरसेगा! मेरा गुम्बद तामीर होगा और गुम्बद पर कलश रखा जायेगा! कलश पर चाँद लगेगा और चाँद के ऊपर तारा होगा और जो शख़्स उस पर कौड़ी मारेगा अल्लाह उसकी मुराद पूरी करेगा! जो हाजतमन्द अपनी हाजत लेकर आएगा उसकी हाजत पूरी होगी! मरीज़ के लिए इस जगह की मिट्टी अक्सीर होगी! देव जिन, आसेब सहेर, चुड़ैल भूत इस जगह से भागेंगे! हज़रत की ख़्वाहिश थी की यहाँ जल्द अज़ जल्द मक़बरह बन जाए इस लिए फ़ौरन चंदा किया गया जिससे कुछ ईंटें आईं और बुनियाद की खुदाई शुरू हो गयी जिसमें पाँच फावड़े हज़रत ने अपने दस्ते पाक से मारा और पाँच ईंटें रखी! बुनियाद भर दी गयी लेकिन आगे का काम सीमेंट न मिलने की वजह से रुक गया! मक़बरह और बारहदरी के तामीर के लिए चंदे की रसीद छपवाई गयीं! हज़रत मुसाफ़िर ख़ाना वालों से बार बार फ़रमाते रहें कि लाओ भैया कुछ लिखदें वरना छटई का पुरवा और माहे मऊ वाले झगड़ा करेंगे! यहाँ इन बातों से साफ़ ज़ाहिर होता है कि हज़रत को अपने विसाल और उसके बाद के हालात भी मालूम थें! और इस से ये भी बात साफ़ हो जाती है कि हज़रत ने इस जगह को अपनी आख़री आरामगाह के तौर पर पसंद फ़रमाया था!

आपका विसाल– अब्दुल शकूर माहे मऊ से मुसाफ़िर ख़ाना मुहम्मद यूनुस के घर पर आएं और हज़रत को माहे मऊ ले जाना चाहा लेकिन आप किसी तरह तैयार नहीं हुएं! अब्दुल शकूर ने

कहा हुज़ूर माहे मऊ के उर्स की तारीख़ क़रीब हो गयी है! उर्स का इन्तेज़ाम कैसे होगा, तो हज़रत बड़े पशो पेश के साथ तैयार हुएं! ४ जून १९७९ ईस्वीं मुताबिक़ १३९९ हिजरी बरोज़ यक शम्बा को मुसाफ़िर ख़ाना से माहे मऊ तशरीफ़ लाएं! दो शम्बा को हज़रत की मौजूदगी में लकड़ी चीरी गयी और कुछ दूसरे इंतेज़ाम किये गयें! मंगल की शब में अब्दुल शकूर से दरगाह किछौछा शरीफ़ और दरगाह जायस में कुछ मज़ारात के बारे में पूछते रहें कि फ़लां की मज़ार कहाँ है, फ़लां की मज़ार कहाँ है अपने वालिदैन के मज़ार के बारे में भी पूछा, अब्दुल शकूर अपनी मालूमात के हिसाब से जवाब देते रहें! बुध को ११ बजे दिन तक ठीक थें ११ बजे के बाद तबियत कुछ ख़राब हो गयी लेकिन फिर संभल गयी! जुमेरात के दिन सुबह हाथ मुँह धुलाया गया! शरबत रूह अफ़ज़ा और दूध नोश फ़रमाया! अण्डा आया लेकिन आपने नहीं खाया और कुटी के पीछे चारपाई पर तशरीफ़ फरमा रहें! कभी उठकर टहलने लगतें कभी फिर लेट जातें! तक़रीबन आठ बजे दिन में कुटी के अंदर तशरीफ़ लाएं और चारपाई पर लेट गयें! ११ बजे दिन में अचानक फिर तबियत ख़राब हो गयी और ऊपर का आधा जिस्म बहुत ज़्यादा गरम हो गया और बेचैनी शुरू हो गयी! अब्दुल शकूर से कभी तलवा कभी सर और कभी कमर दबवातें और कभी अपनी पुश्त सहेलवातें और फ़रमातें कहो हज़रत बास बास और ख़ुद भी उसी लफ्ज़ को दोहरातें रहतें! डेढ़ बजे दो तीन घूँट पानी पिया और लेट गयें! थोड़ी देर के बाद यकायक उठें और सर सजदे में झुका दिया और ऐन हालते सजदा में ८ जून १९७९ ईस्वीं मुताबिक़ १३९९ हिजरी १ रजबुल मुरज्जब बउम्र ४३ साल ३ महीना बरोज़ नौचंदी जुमेरात बवक़्त २ बजे दिन अपनी जान जाने आफ़रीन के सुपुर्द कर दिया और इस तरह आसमाने वलायत का ये चमकता हुआ सितारा हमेशा हमेश के लिए हमारी आँखों से ओझल हो गया!

तज्हीज़ो तकफ़ीन– अब्दुल शकूर माहे मऊ चाहते थें कि हज़रत का मज़ार शरीफ़ कुटिया के बग़ल में बनवाया जाये! उधर मुसाफ़िर ख़ाना के लोग हज़रत के वसीयत के मुताबिक़ हज़रत के जसदे मुबारक को मुसाफ़िर ख़ाना ले जाना चाहते थें! छटई के पुरवा के लोग चाहते थें की हज़रत की आख़री आरामगाह छटई के पुरवा में हो! इस मसले पर झगड़ा छिड़ गया और नौबत यहाँ तक आ गयी की

लाठी डण्डा निकल आया और आपके अक़ीदतमंदों में ज़बरदस्त कशीदगी फैल गयी! ८ घंटा इसी तरह बीत गया बिलआख़िर जनाब रियाज़ुल हसन साहब नियावां व जनाब अब्दुल सत्तार साहब छटई के पुरवा और हज़रत मौलाना मुहम्मद हनीफ़ साहब क़िब्ला मोहतमिम मदरसा सिराजुल उलूम निहालगढ़ और कुछ संजीदा लोगों ने हालात की नज़ाक़त देखकर बड़ी दानिशमंदी से काम लिया और आपके जसदे मुबारक को जायस ले चलने का फैसला किया! आप हज़रात ने सख़्ती से लोगों से कहा की हज़रत के जसदे मुबारक को आपके आबाई वतन जायस ले जाया जायेगा और आपकी तज्हीज़ो तकफ़ीन अन्दरूने दरगाह हज़रत मख़्दूम अशरफ़ जायस होगी और बाद हुज्जत तमाम इसी बात पर इत्तेफ़ाक़ हो गया! इस तरह हज़रत का जसदे अतहर आपके वतन जायस पहुँचा और आपके पुश्तैनी दौलतकदे पर रखा गया!

आख़री दीदार– आपका जसदे मुबारक जब आपके दौलत कदे पर पहुँचा तो आपके चाहनें वालों में ये बात जंगल की आग के तरह फैल गयी! हर तरफ़ से जायस आने वालों की क़तार लग गयी! हर कोई आपके आख़री दीदार का मुश्ताक़ था! सुल्तानपुर रायबरेली प्रतापगढ़ के सारे मदारिस बंद कर दिए गयें थें! जायस के तारीख़ में ये एक यादगार दिन था! हर तरफ़ एक कोहराम बपा था! मुस्लिम ग़ैर मुस्लिम सभी पर क़यामत टूट पड़ी थी! बाद नमाज़ जुमा आपको ग़ुस्ल दिया गया और कफ़न पहना कर आपके जसदे मुबारक को आख़री दीदार के लिए आपके घर के बाहर बंगला पर रख दिया गया!

जुलूसे जनाज़ा– बाद नमाज़े मग़रिब जुलूसे जनाज़ा जायस बंगला से दरगाह मख़्दूम अशरफ़ के तरफ़ रवाना हुआ! आलम ये था कि जनाज़े को कांधा देने के लिए लोग टूटे पड़ रहे थें! हिन्दू मुस्लिम रास्ते में अदबन खड़े थें और आगे बढ़ बढ़ कर जनाज़े को कांधा देते थें! आपके जनाज़े में मख़लूक़े ख़ुदा इस क़सरत से थी की तिल धरने की जगह ना थी!

नमाज़े जनाज़ा– ईदगाह जायस पर हज़रत की नमाज़े जनाज़ा अदा की गयी! क़सीर लोग होने पर ईदगाह की जगह छोटी पड़ गयी जिसके सबब उलेमाकिराम ने दो बार नमाज़े जनाज़ा की जमात करने का फैसला किया! पहली बार नमाज़े जनाज़ा हज़रत मौलाना मुहम्मद हनीफ़ साहब क़िब्ला (मदरसा सिराजुल उलूम लतीफिया निहालगढ़) ने पढ़ाया! दूसरी बार नमाज़े जनाज़ा हज़रत मौलाना सैय्यद मक़सूद अशरफ़ जायसी साहब क़िब्ला ने पढ़ाई! अहले ख़ानदान, मुरीदीन उलेमा व मशाइख़ के शिरकत में ९ जून सन १९७९ ईस्वी मुताबिक़ ३ रजाबुल मुरज्जब सं १३९९ हिजरी शब शम्बा बवक़्त १० बजे रात को अन्दरून दरगाह मख़्दूम अशरफ़ जायस अपने वालिदे मोहतरम के पहलू में मदफ़ून हुएं!

आपके जनाज़े में ग़ैर मुस्लिमों की शिरकत– आपके जनाज़े में ग़ैर मुस्लिम अक़ीदतमंद भी कसीर तादाद में शिरकत के लिए आएं! किशन खतरी बाज़ार साहेबगंज मुसाफ़िर ख़ाना ज़िला सुल्तानपुर ने चालीस मीटर छालटीन कपड़े का एक थान हज़रत के कफ़न के लिए दिया! जमुना प्रसाद चूने वाले शहर सुल्तानपुर ने तीसरे दिन आपके फ़ातेहा में शैनील की ख़ूबसूरत कामदार चादर आपके मज़ार मुबारक पर चढ़ाया! ये पहली चादर थी जो हज़रत के मज़ार पर चढ़ाई गयी!

आपका उर्स– हर साल १ रजाबुल मुरज्जब को आपके विसाल वाले दिन दरगाह मख़्दूम अशरफ़ जायस में आपके जानशीनो ख़लीफ़ा हज़रत सैय्यद मेराज अशरफ़ क़िब्ला की सदारत व सरपरस्ती में तमाम अहबाब व मुरीदीन की हाज़री में बड़ी शानो शौक़त के साथ मनाया जाता है!

आपका उर्स मुसाफ़िर ख़ाना ज़िला सुल्तानपुर में– मुसाफ़िर ख़ाना वालों ने शदीद इसरार किया कि हज़रत के उर्स की

एक तारीख़ हमें भी इनायत की जाये! लिहाज़ा हज़रत के मंझले भाई सैय्यद सिराज अशरफ़ साहब मरहूम ने हज़रत के उर्स की एक ख़ास तारीख़ मुसाफ़िर ख़ाना वालों को दे दिया! फ़ौरन ही उर्स कमेटी तश्कील हुई और ये तय पाया कि हज़रत के विसाल की ख़ास तारीख़ में हमेशा मुसाफ़िर ख़ाना में हज़रत के मक़बरा और बारहदरी में हज़रत के जानशीन हज़रत मेराज अशरफ़ क़िब्ला की सरपरस्ती में उर्स होगा! साथ ही साथ ये भी तय पाया कि हज़रत के जूते और पैरहन रुमाल मुबारक यहाँ तबर्रुक़न रहेंगे ताकि हर शख़्स इनकी ज़ियारत से मुस्तफ़ीज़ हो सके!

आपके जानशीनो ख़लीफ़ा– १२ जून १९७९ ईस्वी मुताबिक़ ५ रजाबुल मुरज्जब १३९९ हिजरी बरोज़ दो शम्बा १० बजे दिन में आपके मकान के सामने बंगला जायस पर एक अज़ीम मजलिस इसाले सवाब मुनअक़िद हुई! जिसमें इसाले सवाब के बाद ख़ानदानी रिवायत के मुताबिक़ हज़ारहा मुरीदीन व मोतक़िदीन व अहले ख़ानदान सज्जादा नशीनांन दरगाह जायस व दीगर रहबराने मिल्लते इस्लामिया व मशाइख़ेकिराम व उलेमाए उज़्ज़ाम मोअज़्ज़िज़ीन मक़ामी व बेरूनी व रऊसाए दयार के नूरानी इज्तेमा में हज़रत के भतीजे हज़रत सैय्यद शाह मेराज अशरफ़ जायसी क़िब्ला के सर पर दस्तारे जानशीनी बाँधी गयी! जिन्हें हज़रत ने अपनी हयात ही में दो साल क़ब्ल अपना मुरीद फ़रमाया था और इजाज़त व ख़लाफ़त से सरफ़राज़ फ़रमा कर अपना जानशीन और सज्जादा नशीन दरगाह हज़रत मख़्दूम अशरफ़ जायस नामज़द फ़रमाया था!

तबर्रुक़ात– सज्जादानशीनांन दरगाह मख़्दूम अशरफ़ जायस में हज़रत हाजी शाह अहमद जायसी रहमतउल्लाह अलैह की औलाद से आपका क़दीम जायसी घराना है इसलिए आपके घर में ख़ानवादाए अशरफ़िया के बुज़ुर्गों के नायाब तबर्रुक़ात भी मौजूद हैं ।

जो एक साहिबे सज्जादा से दूसरे साहिबे सज्जादा तक मुन्तक़िल होते रहें और उसी तरह दस्त ब दस्त और सिलसिला ब सिलसिला आप तक पहुँचा और आपसे आपके जानशीनो ख़लीफ़ा और मौजूदा सज्जादा नशीन हज़रत सैय्यद मेराज अशरफ़ क़िब्ला तक पहुँचा! इन तबर्रुक़ात में ख़िरका.ए.मुबारक हुज़ूर मख़्दूम अशरफ़ जहांगीर सिमनानी किछौछवी रहमतउल्लाह अलैह, क़लमी तस्वीर हज़रत मौलाए कायनात हज़रत अली मुरतज़ा शेरे ख़ुदा रज़िअल्लाहु तआला अन्हु, गुदड़ी मुबारक हज़रत शाह अता अशरफ़ जायसी रहमतउल्लाह अलैह क़ाबिले ज़िक्र है! इसके अलावा और दूसरे तबर्रुक़ात भी हैं जिनके ज़ियारत से ख़ल्के ख़ुदा मुस्तफ़ीज़ होती आई है!

आपके अहले ख़ाना– आप तीन भाई थें! आपके बड़े भाई का इस्मे गिरामी सैय्यद शाह जमील अशरफ़ जायसी था! मंझले भाई सैय्यद शाह सिराज अशरफ़ के नाम से जाने जाते थें जिनके बेटे हज़रत सैय्यद मेराज अशरफ़ जायसी क़िब्ला आपके ख़लीफ़ा और जानशीन हुएं! आप सबसे छोटे थें! आपकी चार हमशीरगान भी थीं जिनका इस्मे गिरामी ये है. सैय्यदा आबिदा ख़ातून (आप रिश्ते में मुसन्निफ़ की बड़ी अम्मा लगती थीं, इन्हीं के आग़ोशे शफ़क़त में मुसन्निफ़ ने परवरिश पाई है) सैय्यदा आसिया ख़ातून, सैय्यदा आसमा ख़ातून और सैय्यदा मुहम्मदुन्निसा!

आपके वालिद हज़रत सैय्यद हुज़ूर अशरफ़ अशरफ़िउल जीलानी के छोटे भाई यानी आपके चचा मोहतरम का इस्मे गिरामी हज़रत सैय्यद ग़ुलाम यूसुफ़ अशरफ़ अशरफ़िउल जीलानी उर्फ़ बब्बू मियां जायसी था जिनकी सिर्फ़ एक ही दुख़्तर बीबी सैय्यदा ख़ातून थीं जो इस किताब के मुसन्निफ़ की हक़ीक़ी दादी थीं!

हज़रत सैय्यद शाह जलाल अशरफ़ जायसी रहमतउल्लाह अलैह एक मजज़ूब और वली.ए.कामिल थें! आप अपने अस्लाफ़ की रौशन तस्वीर थें और अपने जदे.अमजद हज़रत सैय्यद मख़्दूम अशरफ़ जहांगीर सिमनानी किछौछवी रहमतउल्लाह अलैह के हद दर्जा मुशाबेह थें! जिस तरह आपके जद बुज़ुर्गवार ने तख़्त सिमनान को छोड़ा और सल्तनत को ठोकर मार कर लिबासे दरवेशी ज़ेबतन फ़रमाया उसी तरह आपने भी अपनी तमाम जायदाद को ठोकर मार कर दरवेशाना ज़िन्दगी बसर किया! जिस तरह आपके जद अमजद ने दुनिया तर्क कर के तन्हाई अख़्तियार कर ली थी उसी तरह आप भी तारीकुददुनिया थें! अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त से मेरी यही दुआ है कि वो इस ख़ाकसार मुसन्निफ़ को हमेशा बारह इमाम चौदह मासूमीन और चारों पीरां सरकार ग़ौस पाक, सरकार अमीर पाक, सरकार मदार पाक, और सरकार ख़्वाजा पाक, के सदक़े और तुफ़ैल हज़रत की रूहानी फैज़ से मुस्तफ़ीज़ और मुस्तफ़ैद करता रहे और ईमान के साथ ज़िन्दगी और मौत अता करे अमीन या रब्बुल आलमीन!

दुआ का तालिब. अमीर सैय्यद शाह क़ुतुबउद्दीन मुहम्मद आक़िब हसनी क़ुत्बीं!

हज़रत सैय्यद जलाल अशरफ़ रहमतउल्लाह अलैह के ख़ानदान ददिआल और ननिआल का तारीख़ी पसमंज़र– हुज़ूर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम की शहज़ादी हज़रत सैय्यदा फ़ातिमा ज़हरा सलामउल्लाह अलैहा का निकाह हज़रत सैय्यदना मौला अली अलैहिस्सलाम से हुआ जिनसे आपके दो शहज़ादियाँ और तीन शहज़ादे तवल्लुद हुएं!

(1) **हज़रत सैय्यदना इमाम आली मक़ाम इमाम हसन अलैहिस्सलाम**
(2) **हज़रत सैय्यदना इमाम आली मक़ाम इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम**
(3) **हज़रत सैय्यदना मोहसिन अलैहिस्सलाम**
(4) **हज़रत सैय्यदा बीबी ज़ैनब सलामउल्लाह अलैहा और**
(5) **हज़रत सैय्यदा बीबी उम्मे कुलसूम सलामउल्लाह अलैहा!**

हज़रत इमाम हसन मुजतबा अलैहिस्सलाम ने बैतो ख़लाफ़त अपने वालिदे बुज़ुर्गवार हज़रत मौला अली अलैहिस्सलाम से हासिल किया और अपने वालिद के बाद आख़री ख़लीफ़ा राशिद हुएं! आपको ज़हर देकर शहीद करवा दिया गया और आप अपनी वालिदा जनाबे ज़हरा सलामउल्लाह अलैहा के पहलू में जन्नतुल बक़ी शरीफ़ में सुपुर्दे ख़ाक हुएं!

हज़रत सैय्यदना इमाम हसन मुजतबा अलैहिस्सलाम की शादी हज़रत सैय्यदा ख़ौला बिन्त मन्ज़ूर फ़ज़्ज़ारिया से हुई जिनके बत्ने अक़दस से एक शहज़ादे हज़रत सैय्यदना इमाम हसन मुसन्ना अलैहिस्सलाम पैदा हुएं!

हज़रत सैय्यदना इमाम हसन मुसन्ना अलैहिस्सलाम ने अपने वालिदे बुज़ुर्गवार हज़रत सैय्यदना इमाम आली मक़ाम हसन मुजतबा अलैहिस्सलाम और अपने चचा हज़रत सैय्यदना इमाम आली मक़ाम हुसैन शहीदे करबला अलैहिस्सलाम दोनों से बैतो ख़लाफ़त हासिल किया! ख़ानदाने अहले बैते नबूवत के तमाम तबर्रुक़ात आप ही के पास मौजूद थें! आपको भी आपके वालिद के तरह ज़हर देकर शहीद करवा दिया गया!

हज़रत सैय्यदना इमाम हसन मुसन्ना अलैहिस्सलाम की शादी हज़रत सैय्यदना इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की शहज़ादी हज़रत बीबी फ़ातिमा सुग़रा सलामउल्लाह अलैहा से हुई जिनके बत्ने अक़दस से तीन शहज़ादे।

(1) हज़रत हसन मुसल्लस

(2) हज़रत अब्दुल्लाह अल ग़मर और

(3) हज़रत सैय्यदना इमाम अब्दुल्लाह अल महज़ अलैहिस्सलाम पैदा हुएं!

हज़रत सैय्यदना इमाम अब्दुल्लाह अल महज़ अलैहिस्सलाम शैख़–ए–बनु हाशिम कहे जाते थें! आप बहुत मुत्तक़ी परहेज़गार और साहिबे इल्म थें! हर अदना–ओ–आला आपकी हुरमत बजा लाता था! आपने अपने वालिद हज़रत सैयदना सरकार इमाम हसन मुसन्ना अलैहिस्सलाम से बैअत किया और उन्हीं के जानशीनो ख़लीफ़ा हुएं! आपको अब्बासी ख़लीफ़ा जाफ़र अल मंसूर ने इराक़ के हाशिमया क़ैद खाने में क़ैद करवा दिया जिसमें आपको शहादत नसीब हुई!

हज़रत सरकार अब्दुल्लाह अल महज़ अलैहिस्सलाम की शादी हज़रत सैय्यदा हिन्द बिन्त अबु उबैदाह रज़ियल्लाह तआला अन्हु से हुई जिनके

बत्ने अक़दस से तीन शहज़ादे

(1) हज़रत सैय्यदना इमाम मुहम्मद नफ़्से ज़किया शहीद अलैहिस्सलाम

(2) हज़रत सैय्यदना इब्राहीम बाख़ेमीरी शहीद अलैहिस्सलाम

(3) हज़रत सैय्यदना मूसा अल जौन अलैहिस्सलाम पैदा हुएं!

हज़रत सैय्यदना इमाम मुहम्मद नफ़्से ज़किया शहीद अलैहिस्सलाम अपने वालिद हज़रत सरकार सैय्यदना अब्दुल्लाह अल महज़ अलैहिस्सलाम के ख़लीफ़ा और जानशीन हुएं! ख़ानदाने अहले बैते नबूवत के तमाम तबर्रुक़ात आप ही के पास मौजूद थें और ज़ुल्फ़िक़ार ए. अली अलैहिस्सलाम भी आप ही के पास मौजूद थी! आप ही तहरीक अल्वी के बानी हैं और आप ही ने अब्बासियों के ज़ुल्म के ख़िलाफ़ ख़ुरूजो क़याम किया! हज़रत इमाम अबु हनीफ़ा रज़िअल्लाह तआला अन्हु और हज़रत इमाम मालिक रज़िअल्लाह तआला अन्हु ने आप से इल्म हासिल किया और आपके दस्ते पाक पर बैअत किया और आपके रफ़ाक़त में फ़तवा दिया जिसके ऐवज़ हज़रत इमाम अबु हनीफ़ा रज़िअल्लाह तआला अन्हु को ज़हर दे दिया गया और हज़रत इमाम मालिक रज़ियल्लाह तआला अन्हु का बाज़ू कटवा दिया गया! हज़रत इमाम मुहम्मद नफ़्से ज़किया अलैहिस्सलाम के दस्ते हक़ परस्त पर आपके तमाम अहले ख़ाना (सादात अल्वी हसनी हुसैनी) ने और तमाम अहले मक्का मदीना और हिजाज़ ने बैअत किया! सं १४५ हिजरी में बड़ी बेदर्दी के साथ अब्बासी ख़लीफ़ा जाफ़र अल मंसूर ने आपको शहीद करवा दिया!

हज़रत सैय्यदना इमाम नफ़्से ज़किया शहीद अलैहिस्सलाम की शादी हज़रत सैय्यदा उम्मे सलमा बिन्त हज़रत सैय्यदना मुहम्मद इब्न हज़रत सैय्यदना हसन मुसन्ना इब्न हज़रत इमाम सैय्यदना हसन मुजतबा अलैहिस्सलाम से हुई जिनके बत्ने अक़दस से पाँच औलादें तवल्लुद हुई।

(1) हज़रत सैय्यदना सरकार अब्दुल्लाह अल अशतर उर्फ़ अब्दुल्लाह शाह ग़ाज़ी रहमतउल्लाह अलैह

(2) हज़रत सैय्यदना हसन अल अशतर उर्फ़ मिसरी शाह ग़ाज़ी रहमतउल्लाह अलैह

(3) हज़रत सैय्यदना अली रहमतउल्लाह अलैह

(4) हज़रत सैय्यदा ज़ैनब

(5) हज़रत सैय्यदा फातिमा

हज़रत सैय्यदना सरकार अब्दुल्लाह अल अशतर उर्फ़ अब्दुल्लाह शाह ग़ाज़ी रहमतउल्लाह अलैह ने अपने वालिद हज़रत इमाम मुहम्मद नफ़्से ज़किया अलैहिस्सलाम से बैअत की और अपने वालिद के जानशीन होकर पैग़ामे हुसैन अलैहिस्सलाम पहुंचाने के लिए सरज़मीने मदीना से सरज़मीने सिंध तशरीफ़ लाएं जहाँ सन १५३ हिजरी में अब्बासी गवर्नर सफ़ीह बिन अमरु से जंग करते हुए आपने जामे शहादत नोश फ़रमाया! आपका मज़ार मुबारक विलफ़टन करांची पाकिस्तान में समुन्द्र के किनारे मर्जए ख़लायक ख़ासो आम हैं! आपकी पहली शादी आपके चचा के बेटी से मदीना मुनव्वरा में हुई थी जिनके बत्ने अक़दस से आपके एक शहज़ादे हज़रत सैय्यदना मुहम्मद अल असग़र सानी रहमतउल्लाह अलैह पैदा हुए जिनके नस्ले पाक से ख़ानवादा–ए–क़ुतबिया कबीरिया का आलीशान घराना फ़ैज़ बख़्श ख़लायक है और जो हज़रत सैय्यदना जलाल अशरफ रहमतउल्लाह अलैह का ननिआली ख़ानदान है! हज़रत अब्दुल्लाह शाह ग़ाज़ी रहमतउल्लाह अलैह की दूसरी शादी सिंध के राजा की बेटी से हुई जो बतौर ख़िदमत आपके निकाह में दाख़िल थीं जिनके शिकम से आपके एक बेटे हज़रत हसन अल अशतर रहमतउल्लाह अलैह पैदा हुए जो लावल्द फौत हुए!

हज़रत सैय्यदना मूसा अल जौन अलैहिस्सलाम जो हज़रत सरकार इमाम सैय्यदना मुहम्मद नफ़्स ज़किया अलैहिस्सलाम के हक़ीक़ी छोटे भाई थें और आप ही के मुरीदो ख़लीफ़ा भी थें! आप बड़े मुत्तक़ी परहेज़गार थें!

आप अपने दोनों भाईयों हज़रत सैय्यदना मुहम्मद नफ़्स ज़किया अलैहिस्सलाम और हज़रत सैय्यदना इब्राहीम बाख़ेमीरी अलैहिस्सलाम के शहादत के बाद रोहपोश होकर गुमनामी की ज़िन्दगी गुज़ारते रहें और इसी हालत में विसाल फरमा गयें! आपकी नस्ले पाक से तमाम ख़ानवादा–ए–जीलानिया और अशरफ़िया फ़ैज़ बख़्श ख़लायक है और जो हज़रत सैय्यदना जलाल अशरफ़ रहमतउल्लाह अलैह का ददिआली ख़ानदान है!

इस ऐतबार से हज़रत सैय्यद जलाल अशरफ़ रहमतउल्लाह अलैह का सिलसिला–ए–नसब तरफ़ैन से हज़रत सरकार सैय्यदना इमाम हसन मुजतबा अलैहिस्सलाम तक इस तरह से पहुँचता है।"

हज़रत इमाम हसन मुजतबा अलैहिस्सलाम

!

हज़रत हसन मुसन्ना अलैहिस्सलाम

!

हज़रत अब्दुल्लाह अल महज़ अलैहिस्सलाम

!

हज़रत इमाम नफ़्से ज़किया	हज़रत मूसा अल जौन
!	!
हज़रत अब्दुल्लाह शाह ग़ाज़ी	हज़रत अब्दुल्लाह सानी
!	!
हज़रत मुहम्मद अल असग़र सानी	हज़रत मूसा सानी
!	!
हज़रत हसन जव्वाद नक़ीबे अशराफ़	हज़रत दाऊद
!	!
हज़रत अबु मुहम्मद अब्दुल्लाह	हज़रत मुहम्मद
!	!
हज़रत क़ासिम	हज़रत याह्या ज़ाहिद
!	!
हज़रत अबु जाफ़र	हज़रत अब्दुल्लाह सालिस
!	!
हज़रत हसन अल मकनी बाबुल हसन	हज़रत अबु सालेह मूसा जंगी दोस्त
!	!
हज़रत हुसैन अल मदनी	हज़रत अब्दुल क़ादिर जिलानी
!	!
हज़रत ईसा अल मदनी	हज़रत ताजउद्दीन अब्दुल रज़्ज़ाक
!	!
हज़रत यूसुफ़ अल मदनी	हज़रत इमादउद्दीन नस्र
!	!
हज़रत रशीदउद्दीन मदनी	हज़रत अबुल नस्र
!	!
हज़रत अमीर कबीर कुतुबुद्दीन मुहम्मद मदनी	हज़रत सैफ़ुद्दीन हमवोई
!	!
हज़रत निज़ामउद्दीन हसन	हज़रत शम्सुद्दीन जेली
!	!
हज़रत रूक्नउद्दीन मदनी	हज़रत बद्रउद्दीन हसन
!	!
हज़रत सद्रउद्दीन मदनी	हज़रत अबुलअब्बास अहमद
!	

हज़रत क़यामउद्दीन मदनी

!

हज़रत ज़ियाउद्दीन मदनी

!

हज़रत मूसा क़ुत्बी

!

हज़रत सैय्यद शाह क़ुत्बी

!

हज़रत राजे शाह क़ुत्बी

!

हज़रत शाह लाड क़ुत्बी

!

हज़रत मुहम्मद इस्माईल क़ुत्बी

!

हज़रत जलालउद्दीन जलाल क़ुत्बी

!

हज़रत शाह हमज़ा क़ुत्बी

!

हज़रत अब्दुल रसूल क़ुत्बी

!

हज़रत शाह पीर मुहम्मद क़ुत्बी

!

हज़रत शाह फ़तेह मुहम्मद क़ुत्बी

!

हज़रत मुहम्मद हाशिम क़ुत्बी

!

हज़रत करीम बख़्श क़ुत्बी

!

हज़रत महदी बख़्श क़ुत्बी

!

हज़रत शाह अबुल हसन क़ुत्बी शहीद

!

हज़रत शाह ज़कीउद्दीन क़ुत्बी

!

हज़रत बीबी सैय्यदा जमीला ख़ातून

!

!

!

!

हज़रत अब्दुल ग़फ़ूर जेली

!

हज़रत अब्दुल रज़्ज़ाक नुरुल ऐन

!

हज़रत अहमद जायसी

!

हज़रत शाह हाजी क़त्ताल

!

हज़रत शाह जलाल अव्वल

!

हज़रत मुबारक बोदले

!

हज़रत जलाल सानी अशरफ़

!

हज़रत लुत्फ़ अशरफ़

!

हज़रत अबुल क़ासिम अशरफ़

!

हज़रत मुहम्मद बक़ा अशरफ़

!

हज़रत मुहम्मद वफ़ा अशरफ़

!

हज़रत लाड अशरफ़

!

हज़रत लाल अशरफ़

!

हज़रत मुहम्मद अशरफ़

!

हज़रत नूर अशरफ़

!

हज़रत तजम्मल हुसैन

!

हज़रत मुहम्मद अशरफ़

!

हज़रत हुज़ूर अशरफ़

(हज़रत जलाल अशरफ़ रहमतउल्लाह अलैह)

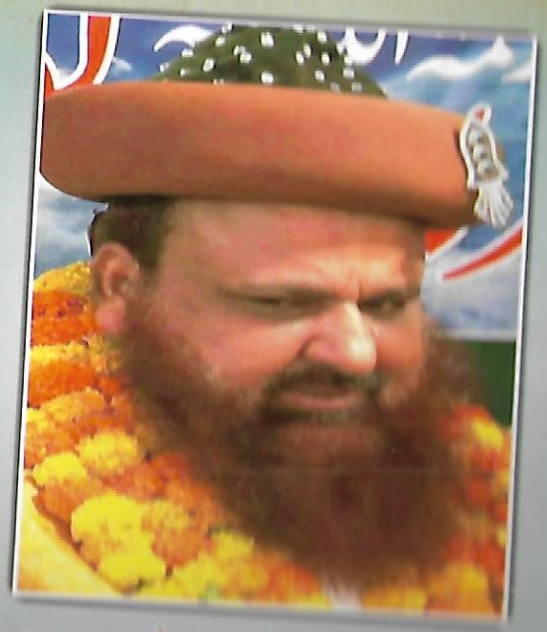

हज़रत सैय्यद मेराज अशरफ़
ख़लीफ़ा व जानशीन
हज़रत सैय्यद जलाल अशरफ़ (रह०)
दरगाह सैय्यद मख़दूम अशरफ़
जायस – ज़िला अमेठी

आफ़ताब-ए-अशरफ़

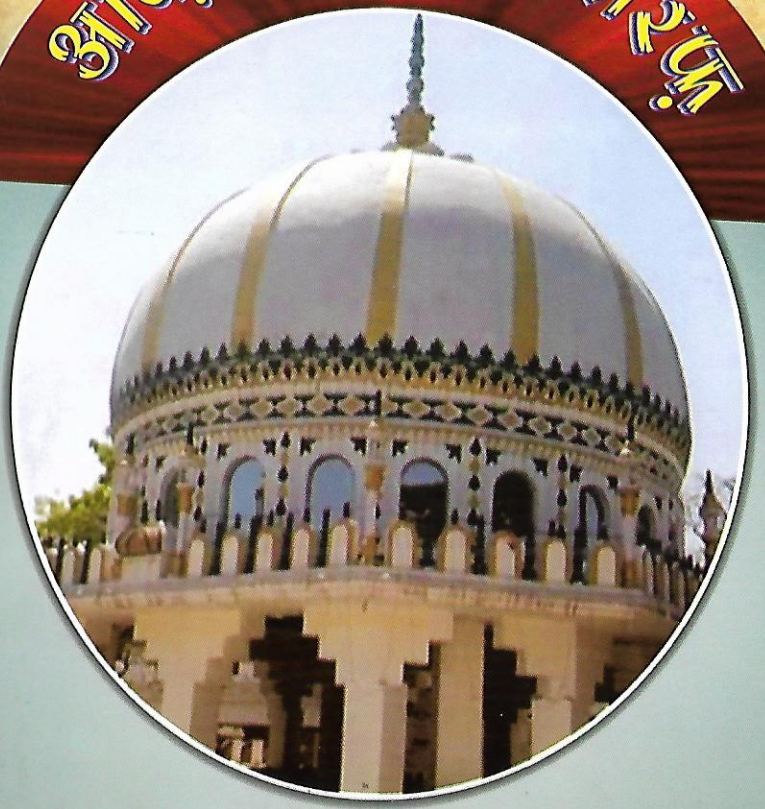

अमीर सैय्यद कुतुबउद्दीन मोहम्मद आक़िब
के क़लम से.....